बोध वाक्यामृत

Bodha Vākyāmṛta

देशनाकार
दिगम्बर जैनाचार्य विशुद्धसागर

EXHORTATION
DIGAMBARA JAINĀCĀRYA VIŚUDDHASĀGARA

बोध वाक्यामृत

ब्राह्मीलिपि, पद्यानुवाद एवं नव भाषामय

देशनाकार

दिगम्बर जैनाचार्य विशुद्धसागर

संकलन

श्रमण मुनिप्रणीतसागर

बोध वाक्यामृत

अनुवादक

प्राकृत : श्रमण मुनि आदित्य सागर

अपभ्रंश : श्रमण मुनि आदित्य सागर

मराठी : श्रमणु मुनि सुप्रभ सागर

छत्तीसगढ़ी : श्रमण मुनि आराध्य सागर

आंग्ल : श्रमण मुनि प्रणीत सागर

ब्राह्मीलिपि : श्रमण मुनि अप्रमित सागर

पद्यानुवाद : श्रमण मुनि अनुपम सागर

संस्कृत : चक्रेश जैन, सागर

गुजराती : राकेश शाह, इन्दौर

तेलगु : मयूरी सुगंधी, हैदराबाद

देशनाकार – दिगम्बराचार्य विशुद्धसागरजी मुनिराज
संकलन – श्रमण मुनि प्रणीतसागर

द्वितीय आवृत्ति – १००० (वर्ष २०१६)

–: प्राप्ति स्थल :–
अखिल भारतीय श्रमण संस्कृति सेवा समिति, इन्दौर (म.प्र.)
श्रावक संस्था साहित्य केन्द्र, भोपाल (म.प्र.)
नमोऽस्तु शासन संघ, मुम्बई
मो. 9425321151, 9826210189, 9425374897, 9324358035

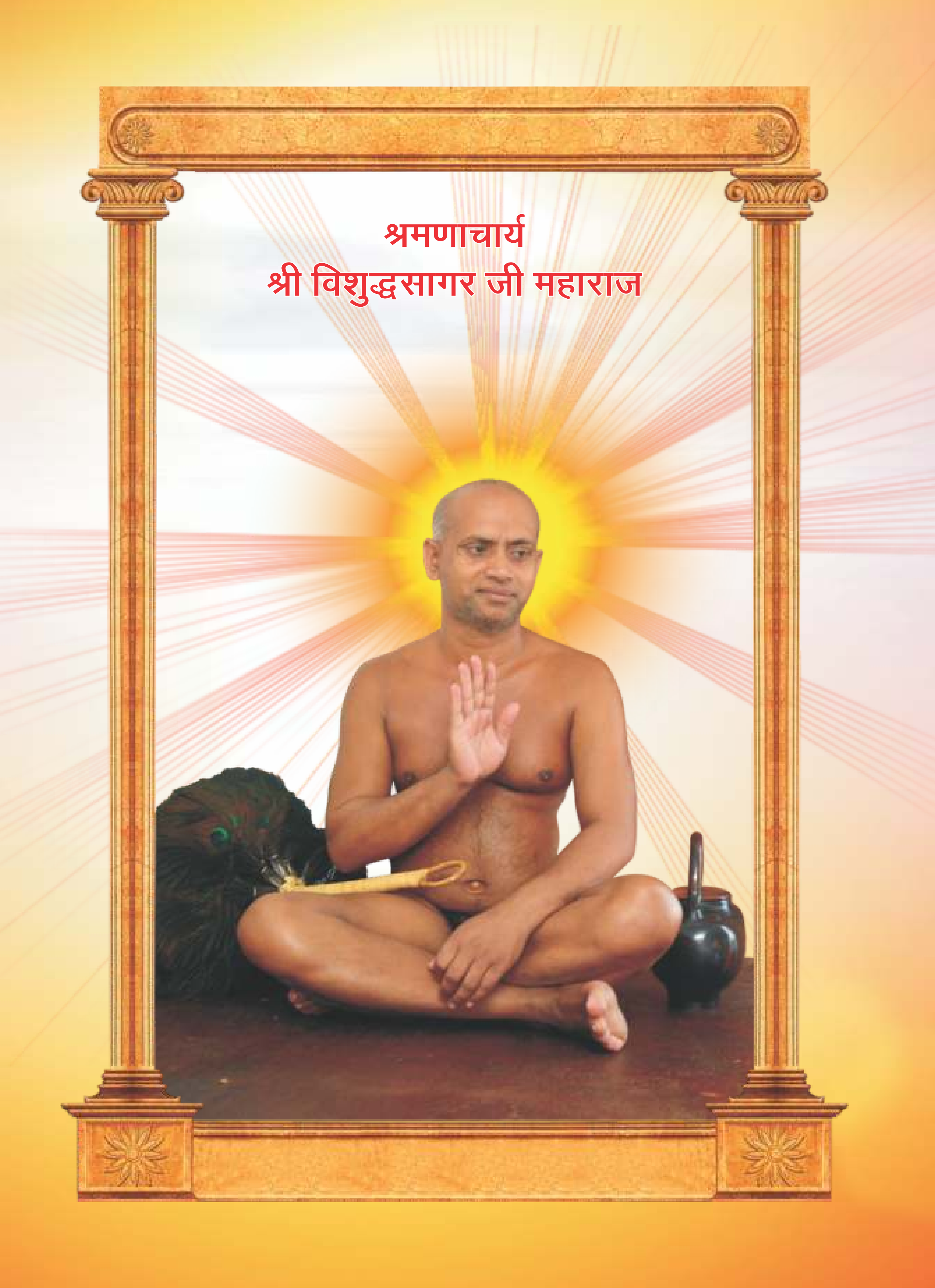
श्रमणाचार्य
श्री विशुद्धसागर जी महाराज

Order of Saints

25 Jewels

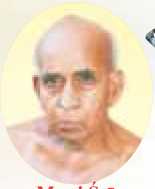

Muni Śrī
Viśvavīra sāgara jī

Muni Śrī
Manojña sāgara jī

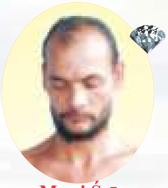

Muni Śrī
Praśama sāgara jī

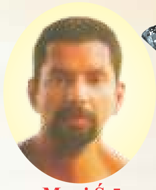

Muni Śrī
Pratyaksha sāgara Jī

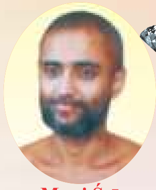

Muni Śrī
Suprabha sāgara jī

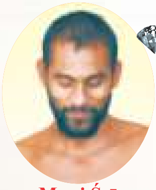

Muni Śrī
Suvrata sāgara jī

Muni Śrī
Suyaśa sāgara jī

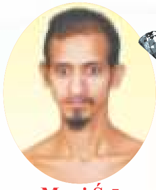

Muni Śrī
Anuttara sāgara jī

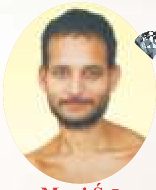

Muni Śrī
Anupama sāgara jī

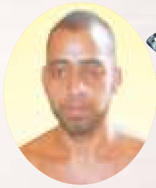

Muni Śrī
Arijita sāgara jī

Muni Śrī
Āditya sāgara jī

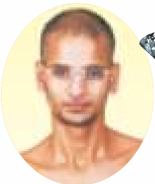

Muni Śrī
Apramita sāgara jī

Muni Śrī
Āstikya sāgara jī

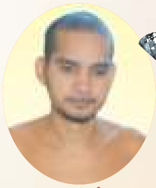

Muni Śrī
Ārādhya sāgara jī

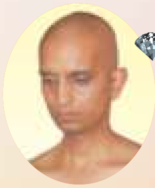

Muni Śrī
Praṇeya sāgara jī

Muni Śrī
Praṇīta sāgara jī

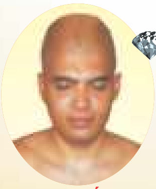

Muni Śrī
Praṇava sāgara jī

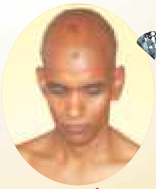

Muni Śrī
Praṇata sāgara jī

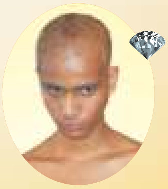

Muni Śrī
Praṇuta sāgara jī

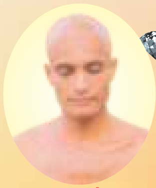

Muni Śrī
Sarvārtha sāgara jī

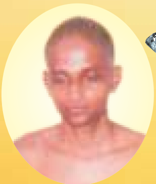

Muni Śrī
Sāmya sāgara jī

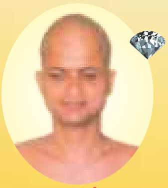

Muni Śrī
Samartha sāgara jī

Muni Śrī
Sahaja sāgara jī

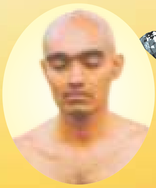

Muni Śrī
Samatva sāgara jī

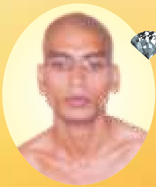

Muni Śrī
Sampūrṇa sāgara jī

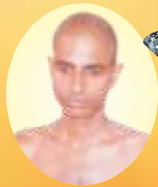

Muni Śrī
Sadeya sāgara jī

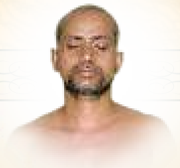

शुभाशीष

साहित्य सद्-विचार, सद् भावों को सुरक्षित रखने की अनुपम विधा है। साहित्य के अभाव में साधु-स्वभाव की रक्षा असंभव है, अतः इस कलिकाल में सद्-साहित्य अत्यन्त अनिवार्य है। ध्यान सिद्धि के लिए सम्यक्-ज्ञान चाहिए, क्योंकि ज्ञान से ध्यान की सिद्धि और ध्यान से निर्वाण की सिद्धि होती है।

पूर्वाचार्यों ने करुण-दृष्टि से स्व-पर कल्याणार्थ जिनवाणी का सृजन कर अपूर्व उपकार किया है। साधु पुरुष वे ही हैं, जो सनातन श्रमण परम्परा के लिए आगे वर्धमानता की ओर ले जा रहे हैं। शिष्य की उत्पत्ति ही सद्-साहित्य का सृजन व आगम की रक्षा के लिए होती है। जिन शासन की प्रभावना शून्य साधक मेदनी पर भार-भूत है।

जिन शासन, नमोऽस्तु शासन के प्रति कृतज्ञता के भाव से विनेय मुनि सुप्रभ सागर, मुनि अनुपम सागर, मुनि आदित्य सागर, मुनि अप्रमित सागर, मुनि आराध्य सागर, व मुनि प्रणीत सागर इन छहों मुनिराजों ने एवं चक्रेश जैन, राकेश शाह, मयूरी सुगंधी जी ने अपनी पवित्र प्रज्ञा से बोध वाक्यामृत कृति को नव भाषाओं, ब्राह्मी लिपि व पद्यानुवाद में परिवर्तन करके जिनभारती की अपूर्व सेवा की है। उन्हें यही मंगलाशीष है कि-ये इसी प्रकार से वाग्वादिनी की सेवा कर स्वपर कल्याण करें।

।। इति अलम्।।

शुभम् भूयात्

पंचकल्याणक गजरथ महोत्सव
आष्टा (म.प्र.)
शुभ दिनाँक ०७/१२/२०१४

आचार्य विशुद्धसागर

णाणं - पयासो

वीतरागी-श्रमण-परम्परा भारत वसुन्धरा पर आद्यकाल से ही प्रवाहमान है। वीतरागी श्रमणों का स्तुत्योल्लेख श्रमण एवं वैदिक द्वय-संस्कृतियों में उधृत है। इस अवसर्पिणी काल के प्रथम सु-संस्कारित श्रेष्ठ महापुरुष ऋषभदेव हुये हैं, जिन्होंने सर्वप्रथम विविध-कलाओं की शिक्षा प्रदान की, जिनमें लेखन भी एक कला है, जो किसी-किसी को ही हस्त-सिद्ध होती है। ऋषभदेव के प्रथम-सुपुत्र चक्रवर्ती भरत के नाम से इस देश का 'भारतवर्ष' नाम सुप्रसिद्ध हुआ।

आद्य तीर्थंकर आदिनाथ से अन्त्य तीर्थंकर भगवान् वर्द्धमान महावीरस्वामी तक आध्यात्मिक आदर्शों से सुसज्जित अरू गौरवशाली परम्परा से प्राप्त तत्त्वज्ञान तथा आत्म-कल्याणकारी उपदेशों के आधार पर विपुल वात्सल्यमयी दिगम्बराचार्यों ने विविध-विधाओं एवं बहु-भाषाओं में वैराग्य वर्धक साहित्य-सृजित किया है।

सत्-साहित्य श्रद्धा-समुन्नति के लिए सुयोग्य-सरल अरू सुलभ साधन है। वह सत्-साहित्य सर्वदर्शी सर्वज्ञ पादपद्माराधक श्रमण-साधुओं के स्वानुभव से सृजित हो, यह तो शिखर पर स्वर्ण-कलश जैसा सुखद-सगुन है।

वस्तुतः सत्-साहित्य वही है, जो संतान को जन्म देने वाली जननी की तरह सनातन धर्म, संस्कारों का रक्षण करे, सद्-बोध, सन्मार्ग दिग्दर्शित करे तथा सु-संस्कारों के प्रति-प्रेरित करे। श्रमण/श्रमणाचार्यों ने सभ्य-समाज के आत्म-कल्याणार्थ, संस्कृति की सुरक्षार्थ सु-संस्कृत, सुष्ठु सरल-सुबोध सत्-साहित्य सोत्साह साहित्य-संसार को समर्पित किया है।

पुरातत्त्व संपदा, श्रावक समाज, श्रमण-संस्कृति, सनातन धर्म को सुरक्षित संरक्षित संबर्धित करने हेतु श्रमण-साहित्य की अत्यंत आवश्यकता है। संस्कार संस्कृति की रक्षा में सत्-साहित्य भी एक सुदृढ़ स्तंभ है।

विश्व-साहित्य में श्रमण-साहित्य का स्तुत्य स्थान है तथा विश्व-शांति, विश्व-मैत्री में संस्तुत्य सहयोग भी है। जैन साहित्य-सम्पदा से शून्य, विश्व साहित्य अपूर्ण है।

इसी सर्वदर्शी सर्वज्ञ, सुपावन, सनातन सुसंस्कृत श्रमण-संस्कृति में सत्-साहित्य सृजक श्रमणाचार्य श्री विशुद्धसागरजी महाराज हुए हैं, जिन्होंने भाष्य, अनुशीलन, परिशीलन अरू देशना से निश्रित शताधिक साहित्यिक-शास्त्र प्रदान कर सु-साहित्य की श्री वृद्धि की है।

इनमें से स्वर्णसूत्रों से सु-सज्जित एक कृति 'बोध-वाक्यामृत' है। जिसका प्रथम-संस्करण मासोपवासी श्रमणरत्न श्री प्रत्यक्षसागरजी के गृहस्थ जीवन के सहोदरों के सत्-पुरुषार्थ से संकलित तथा प्रकाशित हुआ था। इस कृति को समाज में समादर प्राप्त हुआ,

परिणामतः आँग्ल-अभ्यासी, सुयोग्य श्रमण श्री प्रणीतसागरजी ने इस सूत्र कृति का सुबोध अँग्रेजी में अनुवाद करके उगते योवन के युवाओं को अपनी प्रथम जैनेश्वरी-दीक्षा पर सुयोग्य अनुपम-साहित्यिक उपहार दिया। सत्य ही है, साधु-पुरुष संसार के समस्त प्राणियों को स्व-स्वात्म स्वानुभूति के सुखानन्द से सराबोर करना चाहते हैं।

श्रमण-सूत्रों से सु-संस्कृत इन सोपयोगी सुन्दर सुकृति को विविध-भाषियों के सुबोधनार्थ नव सुभाषाओं ने भाषान्तरित करने का विचार सुप्रज्ञापति, श्रमण प्रणीत सागर जी ने किया इस सुभावना को सुव्रतों के धारण सप्त-श्रमणों ने सप्त-दिवस में साकार किया।

प्रस्तुत कृति में मूल सूत्र कुशल देशनाकार श्रमणाचार्य श्रीविशुद्धसागरजी की देशना से संकलित किये गये हैं तथा इन नीति वाक्यों का मराठी-महंत मुनिश्री सुप्रभसागरजी ने इसे महत्-पुरुषार्थ पूर्वक मराठी में अनुदित किया है। पद्य-प्रिय, काव्य-कुशल अवर्य अनगार अनुपमसागरजी ने पद्यमय रूपांतर किया है। आत्मप्रिय-अनुज, आचार्य पाद पद्माराधक, प्राकृत-प्रवीण पाठक अनगार मुनिश्री आदित्यसागरजी मुनिराज ने प्राकृत अरू अपभ्रंष में मनभावन भाषानुवादन किया है।पुष्कल प्रज्ञा-पति, आत्मीय-अनुज, वात्सल्य वरिधि, कवि हृदयी श्रमण श्रीअप्रमितसागरजी ने इन नीति वाक्यों को ब्राह्मी लिपि में रूपान्तरित किया है। विनेय, सरलस्वभावी, छत्तीसगढ़ी श्रमण श्रीआराध्यसागरजी ने इस कृति का छत्तीसगढ़ी भाषा में भाषान्तर किया है, श्रावक रत्न चक्रेश जैन जी ने संस्कृत में, राकेश शाह जी ने गुजराती में, मयूरी सुगंधी जी ने तेलगु में और आँग्ल-अन्वेषी श्रमण प्रणीतसागरजी ने अंग्रेजी अनुवाद करके आत्मान्वेषी अध्यात्म प्रेमियों को एक अनुपम-आलौकिक कृति उपहार दी है।

प्रस्तुत कृति गद्य-पद्यमय जीवनोत्थान के अनमोल आचरणीय-आख्यानों से परिपूरित स्तुत्य कृति है, जिसे पाठकों से सम्माननीय समादर प्राप्त होगा, यही सु-शुभ भावना है।

यह कार्य अनुकरणीय एवं स्तुत्य है, इसलिए सकल साहित्य सृजक श्रमणों को संस्तुत्य-साधुवाद, श्रमणों की साहित्य-सृजनता सदाकालसृजनशील रहे, यही सु-भावना है कि-मुझे भी साहित्य-सृजन की सुयोग्यता, श्रुतसेवा का वरदान, ग्रंथ पारायण का पुण्य प्राप्त हो।सुव्रतों के धारक, सकल साहित्य-सृजक श्रमण अरू श्रमण स्वामियों को श्रमण सुव्रत का समत्व-भावना पूर्वक नमोऽस्तु...।

जयउ णमोत्थु सासणं

''वर्द्धताम् जिनशासनम्'' ''इत्यलं'' ''शुभम् भूयात्''

पंचम संयम दिवस
सन्-२०१४
श्री दि.जैन नन्दीश्वर द्वीप जिनालय
भोपाल (म.प्र.)

सक्षमा
श्रमण सुव्रतसागर मुनि
संघस्थ
(अध्यात्मयोगी आचार्यरत्न १०८ श्री विशुद्धसागर जी महाराज)

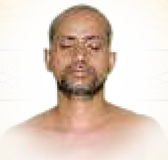

प्राक् - प्रमेय

आचार्य श्री विशुद्धसागरजी के कुछ आनन्द कण शब्दों में युक्तियों के रूप में अवतरित हुए। उन्हें मुनि प्रणीत सागर ने संकलित कर इस पुस्तक के रूप में रचना की। मुनि श्री का विचार बना की गुरुवर के हृदय में अवतरित इन अमृत कणों पर प्राणी मात्र का अधिकार है। इसलिए इन अमृत कणों को जन-जन तक पहुँचाना चाहिए, परन्तु यह विचार आते ही इसके साथ-साथ मुनि श्री के मन में एक समस्या भी आकर खड़ी हो गई। वह समस्या यह थी कि सभी लोग तो गुरुदेव के भाव नहीं समझते हैं। अतः वे कैसे गुरुवर के इन अमृत कणों से आनंद में अभिभूत हो सकेंगे, इसी समस्या के समाधान के रूप में आचार्य कुन्द-कुन्द देव की वह कारिका मुनि श्री के मन में उपस्थित हुई जिसमें आचार्य भगवन् कहते हैं-

जह णवि सक्कमणज्जो अणज्जभासं विणाउ गाहेउं।।८।।समयसार।।

अर्थात् अनार्य को अनार्य भाषा के बिना नहीं समझाया जा सकता। यहाँ पर यह गाथा कहने का भाव यह है कि जो हिन्दी भाषी हैं उन्हें तो सीधे ही गुरुवर के अमृत-कण उनके हृदय के आनंद से अभिभूत कर सकते हैं, परन्तु जो हिन्दी भाषा नहीं समझते उन्हें गुरुवर के हृदयागन में अवतरित आनंद से अभिभूत कराने के लिए मुनि प्रणीतसागर ने यह प्रयास किया है। मुनिश्री के इस प्रयास में उनके हृदयगान का आनंद भी शामिल हो गया है। अतः अब ये अमृत कण आँग्ल भाषीयों को भी आनंद से अभिभूत कर सकेंगे। मुनि प्रणीतसागर की करुणा की इति यहीं नहीं हुई है। अब उनकी करुणा और आगे खड़ी होकर कह रही है कि हिन्दी-अंग्रेजी के अतिरिक्त और भी अन्य भाषाओं के रसिक लोग हैं। उन तक भी यह आनंद रस पहुँचाना चाहिए। इसी भावना से प्रेरित हो मुनिश्री ने अन्य भाषाओं के जानकार संघस्थ मुनिराजों से निवेदन किया की आप भी इन कुछ अमृत कणों को अपनी अभ्यास भाषा रसिकों तक पहुँचाने की कृपा करें। अतः मुनिश्री के अनुरोध पर मुनिश्री आराध्यसागरजी ने-छत्तीसगढ़ी में, मुनिश्री अप्रमितसागर जी ने-ब्राह्मी लिपि में, मुनिश्री आदित्यसागरजी ने-प्राकृत और अपभ्रंश में, मुनिश्री सुप्रभसागरजी ने-मराठी में, राकेश शाह जी ने-गुजराती में, मयूरी सुगंधी जी ने-तेलगु में एवं मैंने संस्कृत में इस तरह यह पुस्तक 9 भाषाओं के रसिक लोगों को आनंद देने वाली होगी।

आज युवा वर्ग सौन्दर्य के पीछे भाग रहा है और सौन्दर्य को प्राप्त करने में कुछ सफल भी हुआ है, पर सत्य को पाने में अभी भी पूरी तरह असफल ही है। जैसे आज-कल कुछ सुन्दर

बौध वाक्यामृत

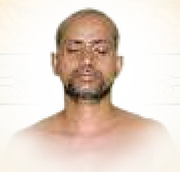

सूक्तियाँ डाउनलोड कर अपने फेमिली ग्रुप पर उसे युवावर्ग भेज रहे हैं। इन सूक्तियों के सौन्दर्य मात्र को न देखें उनकी सत्यता पर भी कुछ विचार करें। जैसे बहुत सामान्य सा मैसेज आप अपने मोबाइल में पाते हैं-

G - enerator O - perator D - estroyer

इस मैसेज में कहा गया है कि भगवान् ही बनाने वाला है, भगवान् ही मिटाने वाला है और भगवान् ही रक्षा करने वाला है। ऐसा मानने पर प्रश्न खड़ा होता है कि बनाने वाला मिटाता क्यों है? खराब हो जाने से मिटता है, तो फिर उसे खराब कौन करता है? खराब या पुराना होना स्वतः मानो तब तो उसका बनना मिटना भी स्वतः ही मानना होगा, क्योंकि जब आधा कार्य स्वतः हो सकता है तो पूरा भी स्वतः ही हो जाएगा और यदि वह स्वयं ही खराब करता है, तो फिर यह प्रश्न खड़ा होता है कि जब खराब ही करना था, तो फिर उसे अच्छा बनाया ही क्यों था, खराब होने पर नष्ट करना पड़ा तो फिर पुराना और खराब किया ही क्यों था?

इस प्रकार के अनेक प्रश्न खड़े होते हैं? ईश्वर को जगत्-कर्ता मानने पर जिसका कोई समाधान नहीं है। अपने-अपने कर्मों के अनुसार सभी को फल भोगना पड़ता है। ऐसा मानने पर सारे प्रश्नों का समाधान हो जाता है और जो कुछ प्रश्न शेष बचते हैं वे प्रश्न विश्व को अनादि निधन पर समाप्त हो जाते हैं।

इन सूक्तियों में सौन्दर्य के साथ सत्य को भी देखें, क्योंकि जो सत्य नहीं है उसके सौन्दर्य का कोई मूल्य नहीं। सत्य के साथ जो सौन्दर्य हो वही सौन्दर्य मूल्यवान होता है। एकाक्षी राजा के तीन चित्रकारों ने तीन चित्र बनाए। पहले चित्र में राजा काना दिखाया गया, जो कि सत्य था, पर सुन्दर नहीं था। दूसरे चित्र में राजा की दोनों आँखें खोल दी गईं, जिससे चित्र में सौन्दर्य तो आ गया पर वह सत्य न रह गया। तीसरे चित्र में राजा एक आँख बन्द कर निशाना लगा रहा था। यह चित्र सत्य के साथ-साथ सुन्दर भी था।

इस पुस्तक में यही प्रयास किया गया है।

स्वयं किये जो कर्म शुभाशुभ फल निश्चित ही वे देते।
आप करें और देय अन्य तो स्वयं किये निष्फल होते।।

- चक्रेश जैन

कार्तिक कृष्ण-५
वीर निर्वाण संवत् २५४१
विक्रम संवत् २०७१

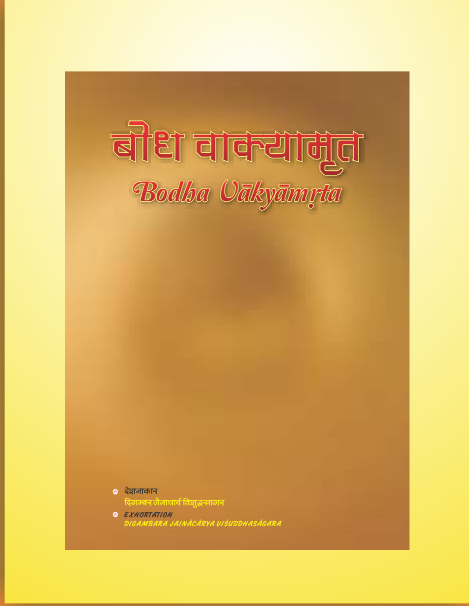

स्मृति शेष

पूज्य पिताश्री

पूज्य माताश्री

स्व. मूलचंदजी जैन (दद्दा)

जन्म : सन् 1900 निधन : 21 अक्टू. 1990

स्व. श्रीमती केशरबाई जैन

जन्म : सन् 1918 निधन : 15 जन. 2008

की पावन स्मृति में प्रकाशित एवं

परमपूज्य आचार्यश्री विशुद्धसागरजी महाराज

के कर कमलों में समर्पित

प्रकाशक एवं समर्पण कर्ता

आजाद कुमार-रवि देवी जैन, सौ. डॉ. सिद्धार्थ चौधरी, चि. विकास-सोनल जैन, चि. अमित-रचना जैन एवं समस्त बीड़ीवाला जैन परिवार

39/2, न्यू पलासिया, इंदौर, फोन : 2537438, मो. : 94253-21151

प्रतिष्ठान

सुन्दरलाल मूलचंद जैन टोबेकोनिस्ट प्रा. लि.

श्री मूलचंद जैन पारमार्थिक ट्रस्ट

31, काछी मोहल्ला, इंदौर, फोन : 0731-2536765, 2430835

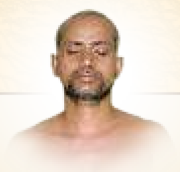

हिन्दी	जो है सो है।
संस्कृत	यस्तु सश्चैव।
प्राकृत	जो सो दु सो चेव।
अपभ्रंश	जु सु दु सु चेव।
मराठी	जे आहे, ते आहे .
छत्तीसगढ़ी	जइसन हे वैसन हे।
गुजराती	જે છે, તે છે.
तेलगु	ఎలా ఉండే , అలా ఉండే.
आंग्ल	Accept as it is.
ब्राह्मीलिपि	𑀚𑁄 𑀳𑁃 𑀲𑁄 𑀳𑁃।-।
पद्यानुवाद	क्या है अरु क्या है नहीं ? ये ही बड़ा बबाल। जो है सो है जानलो, हरले सब जंजाल।।

हिन्दी	अपने पुण्य – पाप का कर्त्ता कोई अन्य नहीं।
संस्कृत	नास्ति कोऽपि कर्तान्यः स्वपुण्यपापस्य।
प्राकृत	अप्प–पुण्णापुण्ण–कत्ता ण केइ अण्णे।
अपभ्रंश	अप्प–पुण्णापुण्ण–कत्तारु ण केइ अण्णो।
मराठी	आपल्या पुण्य–पापाचा कर्त्ता कोणी अन्य नाही .
छत्तीसगढ़ी	अपन पुन्न–पाप के करइया अउ कोनो नइ हे।
गुजराती	પોતા ના પુણ્ય-પાપ નો કર્તા કોઈ બીજો નથી.
तेलगु	మన పుణ్య - పాపాల కర్త మరి ఎవరూ లేరు.
आंग्ल	One is responsible for his own virtue and vices.
ब्राह्मीलिपि	𑀅𑀧𑀦𑁂 𑀧𑀼𑀡𑁆𑀬-𑀧𑀸𑀧 𑀓 𑀓𑀢𑁆𑀢 𑀓𑁄𑀇 𑀅𑀦𑁆𑀬 𑀦𑀳𑀻
पद्यानुवाद	पर को दोषी मत कहो, पर ना दोषी होय। पुण्य–पाप हम खुद करें, कर्त्ता अन्य न कोय।।

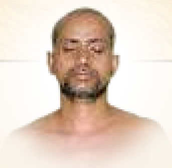

हिन्दी	श्रद्धा की अभिव्यक्ति आचरण के माध्यम से होती है।
संस्कृत	आचरणाच्‌श्रद्धा प्रभवः।
प्राकृत	आचरणादु सड्ढाए पहवो।
अपभ्रंश	आचरणहु सड्ढहे पहवु।
मराठी	श्रद्धेची अभिव्यक्ति आचरणाच्या माध्यमाने होते.
छत्तीसगढ़ी	सरधा भगति आचरन मा दिखथे।
गुजराती	શ્રદ્ધા ની અભિવ્યક્તિ આચરણ ના માધ્યમ થી હોય છે.
तेलगु	శ్రద్ధ యొక్క వ్యక్తైకరణం ప్రవర్తనా మాధ్యంతో అవుతుంది.
आंग्ल	Faith usually expressed through conduct.
ब्राह्मीलिपि	[illegible]
पद्यानुवाद	श्रद्धा किसमें है बनी, है किसका आवरण ? श्रद्धा को प्रकटात है, अपना ही आचरण।।

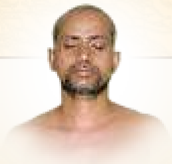

हिन्दी	विषयों की इच्छा होने पर इच्छित कार्य न करना ही संयम है।
संस्कृत	विषयाभिलाषाप्रभवे तदर्थकार्यं न करणं संयमः।
प्राकृत	विसयाकंखाए तस्स अणिच्छिद-कज्ज-करणं संजमो।
अपभ्रंश	विसयाहिलासहिं तसु अणिच्छिय-उज्जम-करण संजमु।
मराठी	विषयांची इच्छा झाल्यावर इच्छित कार्य नाही करणे हाच संयम आहे.
छत्तीसगढ़ी	संयम मनमरजी नो है।
गुजराती	વિષયોની ઇચ્છા થાવા પર ઇચ્છિત કાર્ય ન કરવું જ સંયમ છે.
तेलगु	విషయాల కోరిక కలిగినప్పుడు ఆ కోరికగల కార్యాన్ని చేయకూడడమే నిగ్రహం.
आंग्ल	Not to do the desired task related to sense subjects while having desire is only a restraint.
ब्राह्मीलिपि	[illegible]
पद्यानुवाद	विषयभूत जो भी रहे, संयम का अवरोध। संयम जो गर चाहता, कर इच्छा का निरोध।।

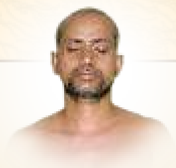

हिन्दी — त्याग पैसे के समान नहीं काँटे के समान करो, जिसे निकालने के बाद देखा नहीं जाता।

संस्कृत — त्यागं कुरु शूलवन्न तुं मुद्रावन् निष्कान्तीकृत्य यं न पश्यति।

प्राकृत — चागो कुण कंटयव्व ण दु वित्तव्व णिक्कंतीकिच्च जं ण पस्सइ।

अपभ्रंश — चागु कर कंटयमिव ण तु दविणमिव णिक्कंतीकिच्च जु ण पस्सए।

मराठी — त्याग पैशासारखा नाही, काट्यासारखा करा ज्याला काढून टाकल्यावर पुनः बघत ही नाही.

छत्तीसगढ़ी — छोड़ ता अइसन छोड़, पइसा असन नई काँटा असन। जेनला लहुट के देखे नई जाय।

गुजराती — ત્યાગ પૈસા ના જેવા નથી, કાંટા ના જેવા કરો જેને કાઢ્યા પાછળ જોવાતા નથી.

तेलगु — త్యాగము ధనం లాగా కాదు శూలం లాగా చేయాలి, దేనిని తీసిన తరువాత అది మరే కనబడదు.

आंग्ल — Sacrifice is like thorn, once removed never seen after.

ब्राह्मीलिपि — [illegible]

पद्यानुवाद — दाम समदाम मत करो, कर काँटे समदान।
निकलत फिर देखत नहीं, सफल यही है दान।।

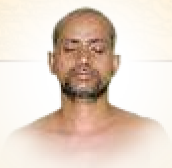

हिन्दी	गुरु की वैयावृत्ति से ज्ञान और चारित्र की वृद्धि होती है।
संस्कृत	गुरुवैयावृत्तेर्ज्ञानचारित्र वृद्धिः।
प्राकृत	गुरु–वेज्जावच्चेण णाण चारित्त–वुड्ढी।
अपभ्रंश	गुरु–वेज्जावच्चें णाण चरित्तवुड्ढि।
मराठी	गुरुच्चा वैय्यावृत्ति ने ज्ञान आणि चारित्र यांची वृद्धि होते .
छत्तीसगढ़ी	गुरु सेवा ले बुद्धि–विवेक दोन्नो बड़थे।
गुजराती	ગુરુ ની વૈયાવૃત્તિ થી જ્ઞાન અને ચારિત્ર ની વૃદ્ધિ હોય છે.
तेलगु	గురువుని సేవించడంతో జ్ఞానం మరియు చరిత్రం యొక్క వృద్ధి చెందుతుంది.
आंग्ल	Serving Preceptor (Guru) elongate the character and wisdom.
ब्राह्मीलिपि	𑀕𑀼𑀭𑀼 𑀓𑀻 𑀯𑁃𑀬𑀸𑀯𑀾𑀢𑁆𑀢𑀺 𑀲𑁂 𑀚𑁆𑀜𑀸𑀦 𑀅𑀭 𑀘𑀸𑀭𑀺𑀢𑁆𑀭 𑀓𑀻 𑀯𑀾𑀤𑁆𑀥𑀺 𑀳𑁄𑀢𑀻 𑀳𑁃॥
पद्यानुवाद	गुरु वैयावृत्ति करो, करना सदा प्रयास। हो ज्ञान अरु चारित्र का, हरदम सदा विकास।।

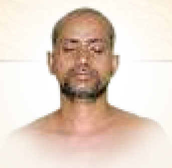

हिन्दी	मित्र पैंदी की तरह होना चाहिए, पारे की तरह नहीं।
संस्कृत	तलवन् मित्रं न तु ढक्कनवत्।
प्राकृत	तलमिव मित्तं ण दु ढक्कणमिव।
अपभ्रंश	तलमिव मित्त ण तु ढक्कणमिव।
मराठी	मित्र भांड्याच्या तळसारखा असावा, झाकणा सारखा नको .
छत्तीसगढ़ी	मितान पेंदी असन होना चाही, ढेकना असन नई।
गुजराती	મિત્ર તળીયુ જેવા હોવા જોઈએ, ઢાંકણા જેવા નથી.
तेलगु	మిత్రుడు తెగువ వలె ఉండాలి మూత వలె కాదు.
आंग्ल	A friend must be like a base, not like a buckler/cover.
ब्राह्मीलिपि	𑀫𑀺𑀢𑁆𑀭 𑀧𑁃𑀁𑀤𑀻 𑀓𑀻 𑀢𑀭𑀳 𑀳𑁄𑀦𑀸 𑀘𑀸𑀳𑀺𑀏, 𑀧𑀸𑀭𑁂 𑀓𑀻 𑀢𑀭𑀳 𑀦𑀳𑀻𑀁॥
पद्यानुवाद	पेंदी जैसे मित्र वही, जो सुख–दुःख में संग। दुःख आत जो छोड़ दे, वो पारे सम रंग।।

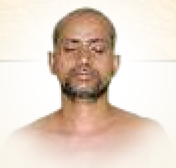

हिन्दी	कभी – कभी व्यक्ति अपने जीवन को, इस संसार को छोड़कर चला जाता है, लेकिन अपने अहं को छोड़ना नहीं चाहता।
संस्कृत	जीवनं संसारं च त्यक्तं नोऽहं तित्यक्षति।
प्राकृत	जीवो णियजीवा य संसारा, अवक्कमइ, ता एव अहं ण मुएज्जा।
अपभ्रंश	जीवु णियजीवहु य संसारहु अवक्कमए, ता एव अहं ण मुयउ।
मराठी	कभी–कभी व्यक्ति आपले जीवन, संसार सोडून तर जाऊ शकतो पण अपला अहंकार सोडू शकत नाही .
छत्तीसगढ़ी	घमण्डी जीवन छोरही पर घमण्ड नइ छोर सके।
गुजराती	ક્યારેક ક્યારેક વ્યક્તિ પોતાના જીવન ને, આ સંસાર ને; છોડીને ચાલ્યો જાય છે; પરંતુ પોતાના અહંકાર ને છોડવા નથી માગતો।
तेलगु	అప్పుడప్పుడు వ్యక్తి తన జీవితాన్ని, ఈ సంసారాన్ని వదిలి వెళ్ళిపోతాడు కాని తన అహంకారాన్ని వదలొద్దు అనుకుంటాడు.
आंग्ल	Sometimes a person leave this world, but do not want to leave his ego.
ब्राह्मीलिपि	[illegible]
पद्यानुवाद	कुटिल जीव की रीति है, जग छोड़त तजप्राण। जतना तन उसको भला, पर न तजे अभिमान।।

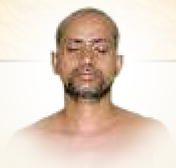

हिन्दी — साधुओं की वंदना करना चाहिए, उन्हें बदनाम नहीं।

संस्कृत — साधुनां वन्दितव्यो न तु निन्दितव्य:।

प्राकृत — साहूणं वंदियव्वो ण दु णिंदियव्वो।

अपभ्रंश — साहूहं वंदेव्वउं ण तु णिंदेव्वउं।

मराठी — साधुंची वंदना केली पाहीजे, त्यांना बदनाम नाही .

छत्तीसगढ़ी — महात्मा मनके जसगान करना चाहि, बदनामी नई।

गुजराती — સાધુઓ ની વંદના કરવુ જોઇએ, તેમને બદનામ નહીં.

तेलगु — సాధువులను వందనం చేయవలసింది, వాళ్ళ నిందితం కాదు.

आंग्ल — One must have to adore saints (Knotless),
not no defame them.

ब्राह्मीलिपि — [illegible]

पद्यानुवाद — ऋषि-मुनियों की वंदना, करो पुण्य का काम।
अशुभ-कर्म बाँधो नहीं, कर इनको बदनाम।।

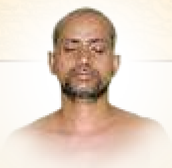

हिन्दी	जो योग्यता न होने पर भी श्रेय लेना चाहे वह मूर्ख है।
संस्कृत	अयोग्येऽपि श्रेयमिच्छति मूढः।
प्राकृत	मूढो अजोग्गदाए वि सेयं इच्छइ।
अपभ्रंश	मूढु अजोग्गदाहिं वि सेय इच्छए।
मराठी	जो योग्यता नसताना ही श्रेय घेऊ पाहतो तो मूर्ख आहे .
छत्तीसगढ़ी	मुरख मन नालायक होके भी जस चाहथे।
गुजराती	જે યોગ્યતા ન હોવા પર પણ, શ્રેય લેવું ચાહે તે મૂર્ખ છે.
तेलगु	ఎవరైతే యొగ్యతా లేనప్పుడు కూడా శ్రేయం పొందాలని కోరుతడో వాడు మూర్ఖుడు.
आंग्ल	He - who does not has ability, even though having a desire of credit, is a foolish person.
ब्राह्मीलिपि	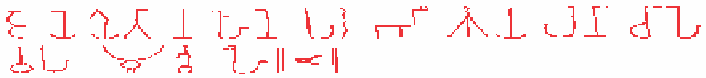
पद्यानुवाद	योग्य बिना जो चाहता, अपना यश गुणगान। यश पाना सब व्यर्थ है, बनता मूर्ख समान।।

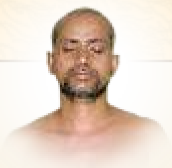

हिन्दी	धर्म को कोई पालता नहीं है, धर्म के पलने में सभी पलते हैं।
संस्कृत	नो केऽपि धर्मं पालयन्ति, धर्मस्य पालनायां पलयन्ति सर्वाः।
प्राकृत	कोवि धम्मं ण पालइ, धम्मस्स पालणाए सव्वे पलंति।
अपभ्रंश	कुवि धम्मु ण पालए, धम्मासु पालणाहिं सव्वा पलंते।
मराठी	धर्म कोणी पाळत नाही, धर्माच्या पाळण्यात सर्वांचे पालन होते .
छत्तीसगढ़ी	धरम ला कोनो नइ पाले धरम झुल्ला मा जम्मो पलथे।
गुजराती	ધર્મ ને કોઈ પાળતુ નથી, ધર્મ ના પલના માં બધા પલે છે.
तेलगु	ధర్మాన్ని ఎవరూ పెరిగెంచరు, పెరిగిన ధర్మం క్రింద అందరూ పెరుగుతరు.
आंग्ल	Nobody cherish religion, rather all observe in the cradle of religion.
ब्राह्मीलिपि	[illegible]
पद्यानुवाद	धरम सभी को पालता, धरम न पाले कोय। जो-जो दिखता है यहाँ, धरम विना ना कोय।।

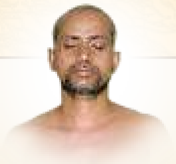

हिन्दी	पर को छोड़ निज को निहार, हो जाएगा तेरा कल्याण।
संस्कृत	परं त्यज निहर स्वं श्रेयस्ते भावी।
प्राकृत	विमुंच अण्णं, पस्स णियं, हविस्सइ सेयं।
अपभ्रंश	विमुंच अण्णु, जोय णियु, होसइ सेया।
मराठी	परला सोड़, नीज ला निहार, होईल तुझे कल्याण .
छत्तीसगढ़ी	दुसर ला नइ खुदेच्च ला देख तभे तोर उद्धार हो ही।
गुजराती	બીજા ને છોડ, પોતા ને નિહાર, થઈ જશે તારૂ કલ્યાણ.
तेलगु	పరాన్ని త్యాగించి స్వయంను నిహారిస్తే నీ యొక్క కల్యాణం జరుగుతుంది.
आंग्ल	Behold your self / soul renouncing non - selves, is the real way to salvation.
ब्राह्मीलिपि	𑀧𑀭 𑀓𑁄 𑀙𑁄𑀟 𑀦𑀺𑀚 𑀓𑁄 𑀦𑀺𑀳𑀸𑀭 𑀳𑁄 𑀚𑀸𑀏𑀕𑀸 𑀢𑁂𑀭𑀸 𑀓𑀮𑁆𑀬𑀸𑀡 𑁈−=𑁈
पद्यानुवाद	पर को देखन बंदकर, निज पर करो निहार। जो देखन निज का हुआ, समझो फिर भवपार।।

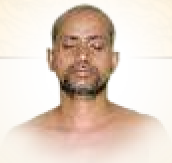

हिन्दी	श्रीमती श्रेष्ठ नहीं है, श्री श्रेष्ठ नहीं है, श्रीजी ही श्रेष्ठ है।
संस्कृत	नो श्रेया श्रीमती, नो श्रेया श्रीः, श्रेयस्तु श्रीजिनः।
प्राकृत	सेया ण सिरिमई, सेया ण सिरी, सेयो हि सिरिजिणो।
अपभ्रंश	सेया ण सिरिमई, सेया ण सिरी, सेयु हि सिरिजिणु।
मराठी	श्रीमती श्रेष्ठ नाही, श्री श्रेष्ठ नाही, श्रीजी च श्रेष्ठ आहेत.
छत्तीसगढ़ी	डउकी अड पइसा ले महान होभे भगवान।
गुजराती	શ્રીમતી શ્રેષ્ઠ નથી, શ્રી શ્રેષ્ઠ નથી, શ્રીજી જ શ્રેષ્ઠ છે.
तेलगु	శ్రీమతి శ్రేష్ఠం కాదు, శ్రీ శ్రేష్ఠం కాదు, శ్రీజీనే శ్రేష్ఠం.
आंग्ल	Neither 'woman' nor 'wealth', only an embodied pure soul is supreme.
ब्राह्मीलिपि	𑀰𑁆𑀭𑀻 𑀫𑀢𑀻 𑀰𑁆𑀭𑁂𑀱𑁆𑀞 𑀦𑀳𑀻𑀁 𑀳𑁃 𑀰𑁆𑀭𑀻 𑀰𑁆𑀭𑁂𑀱𑁆𑀞 𑀦𑀳𑀻𑀁 𑀳𑁃 𑀰𑁆𑀭𑀻𑀚𑀻 𑀳𑀻 𑀰𑁆𑀭𑁂𑀱𑁆𑀞 𑀳𑁃।
पद्यानुवाद	'श्री' और 'श्रीमती' तेरी, बन सकती है श्रेष्ठ। श्रेष्ठ कभी बनती नहीं, श्री जी ही है श्रेष्ठ।।

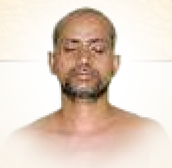

हिन्दी	मूर्ख मित्र की अपेक्षा ज्ञानी शत्रु श्रेष्ठ है।
संस्कृत	ज्ञानी शत्रुश्श्रेयोऽज्ञानिमित्रात्।
प्राकृत	मूढमित्त-अवेक्खाए वरो णाणिरिऊ।
अपभ्रंश	मूढमित्त-अवेक्खाहे वरु णाणिरिऊ।
मराठी	मूर्ख मित्रापेक्षा ज्ञानी शत्रु श्रेष्ठ आहे .
छत्तीसगढ़ी	लेड़गा मितान ले समझदार बइरी बने।
गुजराती	મૂર્ખ મિત્ર ની અપેક્ષા જ્ઞાની શત્રુ શ્રેષ્ઠ છે.
तेलगु	మూరుడైన మిత్రుని అపేక్ష జ్ఞానుడైన శత్రువుడే శ్రేష్ఠుడు.
आंग्ल	An intelligent enemy is more better than a foolish friend.
ब्राह्मीलिपि	𑀫𑀽𑀭𑁆𑀔 𑀫𑀺𑀢𑁆𑀭 𑀓𑀻 𑀅𑀧𑁂𑀓𑁆𑀱𑀸 𑀜𑀸𑀦𑀻 𑀰𑀢𑁆𑀭𑀼 𑀰𑁆𑀭𑁂𑀱𑁆𑀞 𑀳𑁃 ॥
पद्यानुवाद	शत्रु एक वो महान है, अगर हो ज्ञानवान। सखा हजारों व्यर्थ है, होवें अगर अज्ञान।।

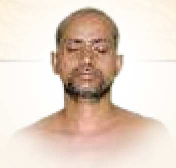

हिन्दी — जलने से पहले जलना छोड़ दो।

संस्कृत — ईर्षां त्यज प्राग्दहनात्।

प्राकृत — पुव्विं मरणं विमुंच ईसं।

अपभ्रंश — मरण पुव्वि मुंच ईसा।

मराठी — जळण्याआधी जळणं सोडून द्या.

छत्तीसगढ़ी — जरे के पहीली जलनखोरी छोर।

गुजराती — જળવા થી પેહેલા જળવુ છોડી દો.

तेलगु — మరణించే ముందు ఈర్ష్యను త్యగించండి.

आंग्ल — Leave feeling jealously before moving to cremation ground.

ब्राह्मीलिपि — [illegible]

पद्यानुवाद — रागद्वेष की भावना, रखना अब तू छोड़।
जल जायेगा इसीलिए, पहले जलना छोड़।।

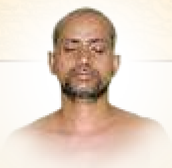

हिन्दी	जितने भी सम्मान हैं सब आत्मा के अपमान हैं।
संस्कृत	यावन्ति सम्मानानि तानि सर्वाणि ह्यात्मनोऽपमानानि।
प्राकृत	सव्वाणि सम्माणं अप्पणो अवमाणं।
अपभ्रंश	सव्वा सम्माणा, अप्पासु अवमाणा।
मराठी	जेवढे सन्मान आहेत, ते सगळे आत्म्याचे अपमान आहेत .
छत्तीसगढ़ी	मन के इज्जत अउ मनखे के बेज्जति एक्केच्च होथे।
गुजराती	જેટલા પણ સમ્માન છે બધા આત્મા નાં અપમાન છે.
तेलगु	అన్ని సమ్మానాలు ఆత్మ యొక్క అపమానాలు.
आंग्ल	All the social honors lead to dishonor to the soul.
ब्राह्मीलिपि	[illegible]
पद्यानुवाद	मान बढ़ाने के लिये, करत सभी सम्मान। सत्य मगर ना भूलिये, होत आत्म अपमान।।

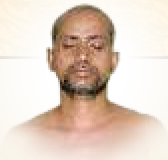

हिन्दी	भवनों से निर्वाण नहीं होता, भावनाओं से निर्वाण होता है।
संस्कृत	भवनेभ्यो न हि भावनाभ्यो निर्वाणम्।
प्राकृत	भवणादु णवि णिव्वाणं, भावणादु एव णिव्वाणं।
अपभ्रंश	भवणाहु णवि णिव्वाणुं, भावणाहे हु णिव्वाणुं।
मराठी	भवनानीं निर्वाण नाही, भावनांनीं निर्वाण होतो.
छत्तीसगढ़ी	घर-कुरिया ले भगवान नई होए भावना ले भगवान होथे।
गुजराती	ભવનો થી નિર્વાણ નથી, ભાવનાઓ થી હોય છે.
तेलगु	భవనాలతో నిర్వాణం కాదు, భావనాలతో అవుతుంది.
आंग्ल	Spirit is the only way to salvation, not construction.
ब्राह्मीलिपि	[illegible]
पद्यानुवाद	भव में भावना भाइए, जिससे हो निर्वाण। अवसर ऐसा खोत क्यों, करके भवन निर्वाण।।

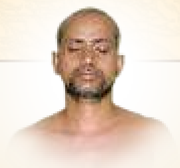

हिन्दी	जितनी प्रीति रोटी से है, उतनी ही प्रभु से करो।
संस्कृत	यावद् भोज्यात्प्रीतिः तावत्कुरु प्रभोः।
प्राकृत	जद्देहि पीयो अण्णा, तद्देहि पहूदो कुण।
अपभ्रंश	जेम पीयु अण्णाहे, तेम पहूहे कर।
मराठी	जेवढी प्रिती चपातीवर आहे, तेवढीच प्रभुंवर करा.
छत्तीसगढ़ी	जतेक पसंद रोटी हे वतके पसंद भगवान ला कर।
गुजराती	જેટલી પ્રીતિ રોટલી થી છે, તેટલી જ પ્રભુ થી કરો.
तेलगु	భోజనంతో ఎంత ప్రేమ ఉందో అంతే ప్రేమ భగవంతుని-తో చేయండి.
आंग्ल	Love God like you love your food.
ब्राह्मीलिपि	[illegible]
पद्यानुवाद	प्रभू भजन वैसा करो, ज्यों रोटी से प्रीत। प्रभू ध्यान से हो चलो, इस भव से आतीत।।

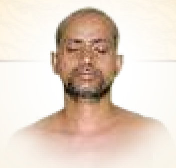

हिन्दी — निंदा करके दूसरों के दोषों को प्रकट करना भी हिंसा ही है।

संस्कृत — निन्द्यात् परदोषान् प्रगटनं हिंसा।

प्राकृत — णिंदं किच्चा परदोसपयडं हिंसा।

अपभ्रंश — णिंदा करिवि परदोसपयडु हिंसा।

मराठी — निंदा करून दुसऱ्यांचे दोष प्रकट करणे पण हिंसा च आहे .

छत्तीसगढ़ी — चुगलखोरी भी हिंसा हे।

गुजराती — નિંદા કરીને બીજાના દોષો ને પ્રકટ કરવું પણ હિંસા જ છે.

तेलगु — ఇతరులను నిందించి వారి దోషాలను ప్రకటించడం
కూడా హింస అనబడుతుంది.

आंग्ल — To manifest other's faults being backbitting
is also a violence.

ब्राह्मीलिपि — [illegible]

पद्यानुवाद — वध करना सुनते रहे, है हिंसा का काम।
निंदा चुगली को जानिए, हिंसा दूजा नाम।।

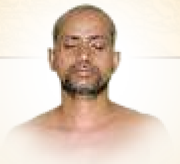

हिन्दी	जैसी कल्पना होगी, वैसी ही परिणति होती है।
संस्कृत	यथा कल्पना परिणतिस्तथा।
प्राकृत	जह कप्पणा तह परिणई।
अपभ्रंश	जहा कप्पणा तहा परिणई।
मराठी	जशी कराल कल्पना, तशी च होते परिणती .
छत्तीसगढ़ी	जइसन बुद्धि वइसन शुद्धि।
गुजराती	જેવી કલ્પના હશે, તેવી જ પરિણતિ હોય છે.
तेलगु	ఊహ ఎలా ఉంటుందో, మన ఆలోచన కార్యాలు కూడా అలాగే ఉంటాయి.
आंग्ल	As an imagination, the thought activity becomes accordingly.
ब्राह्मीलिपि	[illegible]
पद्यानुवाद	जैसी बनती सोच है, वैसी परिणति होत। परिणति जैसी हो गई, वैसी फिर गति होत।।

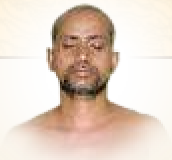

हिन्दी	सहयोग, स्वाभिमान का हरण करके नहीं करना चाहिए।
संस्कृत	अपहृत्य स्वाभिमानं सहयोगो न कर्तव्यः।
प्राकृत	साहिमाणं हरित्ता सहजोगं णवि कुज्जा।
अपभ्रंश	साहिमाणु हरेवि सहजोगु ण करउ।
मराठी	सहयोग, स्वाभिमानाचे हरण करून नाही केला पाहिले .
छत्तीसगढ़ी	सहायता बाइज्जत करना चाहि।
गुजराती	સહયોગ, સ્વાભિમાન નો હરણ કરીને નહીં કરવુ જોઈએ.
तेलगु	స్వాభిమానాన్ని హరించి సహాయోగం చేయకూడదు.
आंग्ल	Do not help any one killing your self-respect.
ब्राह्मीलिपि	𑀲𑀳𑀬𑁄𑀕, 𑀲𑁆𑀯𑀸𑀪𑀺𑀫𑀸𑀦 𑀓𑀸 𑀳𑀭𑀡 𑀓𑀭𑀓𑁂 𑀦𑀳𑀻𑀁 𑀓𑀭𑀦𑀸 𑀘𑀸𑀳𑀺𑀏॥
पद्यानुवाद	साथ सभी का दीजिए, पर तजके अभिमान। सहयोगी बनकर कभी, मत हरो स्वाभिमान।।

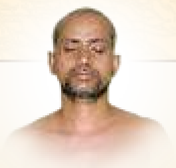

हिन्दी	श्रुत के श्रवण से कर्मों की निर्जरा होती है।
संस्कृत	श्रुतश्रवणात्कर्मनिर्जरा।
प्राकृत	सुय-सवणादो कम्म-णिज्जरा।
अपभ्रंश	सुयसवणाहु कम्मणिज्जरा।
मराठी	श्रुत श्रवण केल्याने कर्माची निर्जरा होते .
छत्तीसगढ़ी	जिनवानी सुने ले करम झरथे।
गुजराती	શ્રુતજ્ઞાન સાંભળવાથી કર્મોની નિર્જરા થાય છે.
तेलगु	శ్రుత్ యొక్క శ్రవణం వల్ల కర్మాల నిర్జరా అవుతుంది.
आंग्ल	Listening to the concepts of scriptures lead to dissociation of karmas.
ब्राह्मीलिपि	[illegible]
पद्यानुवाद	श्रद्धा भक्ती भाव से, श्रुत सुन धरता धार। जिनवाणी श्रुत जानिये, कर्म-निर्जरा सार।।

हिन्दी	संसार में सबसे बड़ा रोग हीनभावना ही है।
संस्कृत	संसारे प्रबलरोगो हीनभावना।
प्राकृत	संसारे पबलरोगो हीणभावणा।
अपभ्रंश	संसारि पबलरोगु हीणभावणा।
मराठी	संसारात सगळ्यात मोठा रोग हीन भावना च आहे .
छत्तीसगढ़ी	सबले बड़े बिमारी खुदला छोटे मानना।
गुजराती	संसार मां सौथी मोटो रोग हीनभावना ज छे.
तेलगु	సంసారంలో ప్రబలమైన రోగం హీనభావనే.
आंग्ल	The biggest disease of the world is an inferiority complex.
ब्राह्मीलिपि	[illegible]
पद्यानुवाद	हीन-दीन बन जो रहे, और हीन के योग। हीन भावना सम नहीं, होता दूजा रोग।।

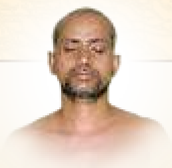

हिन्दी	गुरु वह है जिसने अपने गुरूर का अभाव कर दिया है।
संस्कृत	गारवहीनो हि गुरुः।
प्राकृत	जे णिय–गव्व–अभावं करइ, स गुरू।
अपभ्रंश	जु णियगव्व–अभावु करइ, सु गुरू।
मराठी	गुरू, तो आहे ज्याने आपला गुरूर (घमंड) नष्ट केला आहे .
छत्तीसगढ़ी	मान छुट्टा महान होथे।
गुजराती	ગુરુ તે છે જેમને પોતાના ગુરૂર નો અભાવ કરી દિધો છે.
तेलगु	ఎవరైతే తన గర్వాన్ని నష్టించాడో అతడే గురువు.
आंग्ल	Preceptor or spiritual teacher is the one who destructed his pride.
ब्राह्मीलिपि	𑀕𑀼𑀭𑀼 𑀯𑀳 𑀳𑁃 𑀚𑀺𑀲𑀦𑁂 𑀅𑀧𑀦𑁂 𑀕𑀼𑀭𑀽𑀭 𑀓𑀸 𑀅𑀪𑀸𑀯 𑀓𑀭 𑀤𑀺𑀬𑀸 𑀳𑁃 ॥
पद्यानुवाद	गुरु में गुरुर जब रहे, गुरु न कभी कहाए। गुरु तज गुरु होत वो, सबका गुरु कहाए।।

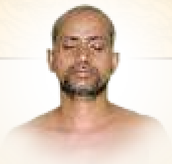

हिन्दी	गुरु जब तक शिष्य को डाँटता रहता है तभी तक शिष्य का विकास संभव है।
संस्कृत	यावद्गुरू रूष्यति तावद् विनेयो विलसति।
प्राकृत	जावं विणेयं विडंबइ गुरू, तावं संभवो विणेय-विगासो।
अपभ्रंश	जाम विणेयु विडंबए गुरू, ताम संभवु विणेय-विगासु।
मराठी	गुरू जोपर्यंत शिष्याला रागवतो तो पर्यंत शिष्याचा विकास संभव आहे .
छत्तीसगढ़ी	चेला तभेतक ऊँचा जाथे, जब तक गुरूजी के डाट-फटकार खाथे।
गुजराती	ગુરુ જ્યાં સુધી શિષ્યને ડાંટતો રહે છે, ત્યાં સુધી શિષ્યનો વિકાસ સંભવ છે
तेलगु	గురువు ఎప్పుడివరకైతే శిష్యుని తిట్టడో అప్పుడివరకే శిష్యుని వికాసం అవుతుంది.
आंग्ल	Chide of guru lead to development of his disciple.
ब्राह्मीलिपि	[illegible]
पद्यानुवाद	जब तक शिष्य में जानिये, उच्च शिखर की आस। गुरु अनुशासन में रहे, रखकर के विश्वास।।

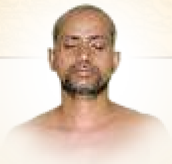

हिन्दी	अज्ञानी अपने ही गुणों का विनाश करता है।
संस्कृत	स्वस्यैवाज्ञानी नश्यति गुणान्।
प्राकृत	अण्णाणी करइ णियगुणविणासं।
अपभ्रंश	अण्णाणी करइ णियगुणविणासा।
मराठी	अज्ञानी आपल्याच गुणांचा विनाश करतो.
छत्तीसगढ़ी	लेड़गा खुदेच्च के अच्छाई ला खाथे।
गुजराती	અજ્ઞાની પોતાના ગુણોનો વિનાશ કરે છે.
तेलगु	అజ్ఞానుడు తన గుణాలనే నశిస్తాడు.
आंग्ल	A nescient ruin his own qualities.
ब्राह्मीलिपि	𑀅𑀚𑁆𑀜𑀸𑀦𑀻 𑀅𑀧𑀦𑁂 𑀳𑀻 𑀕𑀼𑀡𑁄𑀁 𑀓𑀸 𑀯𑀺𑀦𑀸𑀰 𑀓𑀭𑀢𑀸 𑀳𑁃 𑁇𑁇
पद्यानुवाद	प्रज्ञावान करता रहे, सद्गुण सदा विकास। प्रज्ञाहीन करता सदा, निजगुण का ही नाश।।

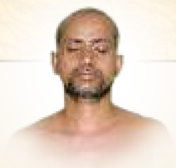

हिन्दी — पुण्य से पैसा मिलता है, पैसे से पुण्य नहीं मिलता।

संस्कृत — पुण्यात्स्वं न तु स्वात्पुण्यम्।

प्राकृत — पुण्णादु वित्तं ण दु वित्तादु पुण्णं।

अपभ्रंश — पुण्णाहु वित्ता ण तु वित्ताहु पुण्णा।

मराठी — पुण्याने पैसा मिळतो, पैशाने पुण्य नाही मिळत .

छत्तीसगढ़ी — पुन्नले पइसा मिलथे, पइसा ले पुन्न नइ मिले।

गुजराती — પુણ્ય થી પૈસા મળે છે, પૈસાથી પુણ્ય નથી મળતું.

तेलगु — పుణ్యం చేత ధనం లభిస్తుంది, ధనం చేత పుణ్యం లభించదు.

आंग्ल — One can earn wealth from virtue,
but can't virtue from wealth.

ब्राह्मीलिपि — [illegible]

पद्यानुवाद — पुण्य दाम से ना मिले, मिले पुण्य से दाम।
विभव सदा जो चाहता, तो कर पुण्य का काम।।

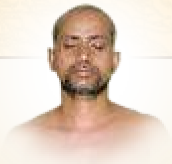

हिन्दी	विनय के अभाव में ज्ञान नहीं होता है।
संस्कृत	नो ज्ञानं विनयाभवे।
प्राकृत	विणयाभावे णो णाणं।
अपभ्रंश	विणयाभावि ण णाणुं।
मराठी	विनयाच्या अभावात ज्ञान होत नाही.
छत्तीसगढ़ी	इज्जत बिना इजाफा नइ होवे।
गुजराती	વિનય ના અભાવ થી જ્ઞાન નથી થાય છે.
तेलगु	వినయం యొక్క అభావంతో జ్ఞానం జరగదు.
आंग्ल	No knowledge without modesty.
ब्राह्मीलिपि	𑀯𑀺𑀦𑀬 𑀓𑁂 𑀅𑀪𑀸𑀯 𑀫𑁂𑀁 𑀜𑀸𑀦 𑀦𑀳𑀻𑀁 𑀳𑁄𑀢𑀸 𑀳𑁃।
पद्यानुवाद	विनय-भाव जब-तक नहीं, रहे सदा अज्ञान। विनय-भाव से आत है, हर विद्या का ज्ञान।।

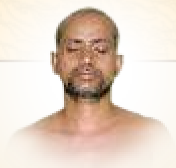

हिन्दी	गरीबी सहयोग माँगती है, अहंकार नहीं।
संस्कृत	नोऽहं, सहायमिच्छति निर्धनता।
प्राकृत	दीणत्तं मग्गंति सहजोगो, णेव अहंकारो।
अपभ्रंश	दीणत्तु मग्गहिं सहजोगु, ण हु अहंकारु।
मराठी	गरीबी सहयोग मागते, अहंकार नाही .
छत्तीसगढ़ी	गरीब–गुरूआ सहायता मांगथे घमण्ड नइ।
गुजराती	ગરીબી મદદ માંગે છે, અહંકાર નહીં.
तेलगु	పేదత్వం సహాయోగం అడుగుతుంది, అహంకారం కాదు.
आंग्ल	Poverty demands help, but egoism does not.
ब्राह्मीलिपि	𑀕𑀭𑀻𑀩𑀻 𑀲𑀳𑀬𑁄𑀕 𑀫𑀸𑀁𑀕𑀢𑀻 𑀳𑁃, 𑀅𑀳𑀁𑀓𑀸𑀭 𑀦𑀳𑀻𑀁।
पद्यानुवाद	निर्धन कभी न चाहता, अहंकार का योग। अहंकार तज चाहता, जन–जन का सहयोग।।

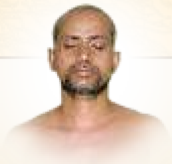

हिन्दी	जीव जैसा पुरुषार्थ करता है, वैसा ही फल भोगता है।
संस्कृत	पौरुषानुरूपफलं जीवो भुञ्जति।
प्राकृत	जहा ववसायो तहा फलं अहिभुंजइ जीवो।
अपभ्रंश	जहा ववसायु तह फला अहिभुंजए जीवु।
मराठी	जीव जसा पुरूषार्थ करतो तसा च फळ ही भोगतो .
छत्तीसगढ़ी	जइसन करनी वइसन भरनि।
गुजराती	જીવ જેવો પુરુષાર્થ કરે છે, તેવો જ ફળ ભોગે છે.
तेलगु	జీవుడు ఎలా ప్రయత్నిస్తాడో , అలాగే ఫలాన్ని అనుభవిస్తాడు .
आंग्ल	As the effort of a person, will enjoy fruit / result accordingly.
ब्राह्मीलिपि	𑀚𑀻𑀯 𑀚𑁃𑀲𑀸 𑀧𑀼𑀭𑀼𑀱𑀸𑀭𑁆𑀣 𑀓𑀭𑀢𑀸 𑀳𑁃 𑀯𑁃𑀲𑀸 𑀳𑀻 𑀨𑀮 𑀪𑁄𑀕𑀢𑀸 𑀳𑁃॥
पद्यानुवाद	जीव यहाँ जैसा करे, पुरुषार्थ हरपल। वैसा फल वो भोगता, आज मिले या काल।।

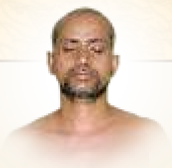

हिन्दी — दोष वस्तु में नहीं, दृष्टि में ही है।

संस्कृत — नो वस्तौ, दोषो दृष्टौ।

प्राकृत — णत्थि वत्थुम्हि, दिट्ठीए दोसो।

अपभ्रंश — वत्थुहि णत्थि, दिट्ठीहिं दोसु।

मराठी — दोष वस्तुत नाही, दृष्टित आहे .

छत्तीसगढ़ी — सामने बुराई नइ सोंच में हे।

गुजराती — દોષ વસ્તુ માં નથી, દૃષ્ટિ માં જ છે.

तेलगु — దోషం వస్తువులో కాదు దృష్టిలో ఉంది.

आंग्ल — Fault is in a vision, not in an object.

ब्राह्मीलिपि — [illegible]

पद्यानुवाद — वस्तु तो वस्तु होत है, दृष्टि भी दृष्टि होत।
वस्तु में नहीं खोट है, खोट दृष्टि में होत।।

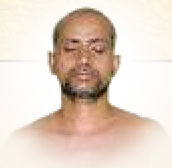

हिन्दी	वाणी मधुर करना हो, तो मौन रहना सीखो।
संस्कृत	वाणीमनोहरं करणं शिक्षन्तां मौनम्।
प्राकृत	वाणी–महुरं करणं दु मोणं संधार।
अपभ्रंश	वाणी–महुरा करणा दु मोण संधार।
मराठी	वाणी मधुर करायची असेल, तर मौन रहायला शिका.
छत्तीसगढ़ी	बोली सुग्घर होथे चुप्पी ले।
गुजराती	વાણી મધુર કરવુ હોય, તો મૌન રહવુ સીખો.
तेलगु	మన మాటలు కోమలంగా ఉండాలంటే మౌనం ధరించడం నేర్చుకోవాలి.
आंग्ल	To be a good Orator - Be quite.
ब्राह्मीलिपि	𑀯𑀸𑀡𑀻 𑀫𑀥𑀼𑀭 𑀓𑀭𑀦𑀸 𑀳𑁄, 𑀢𑁄 𑀫𑁅𑀦 𑀭𑀳𑀦𑀸 𑀲𑀻𑀔𑁄 ।==।
पद्यानुवाद	कर्कश वाणी बोलना, सुनना चाहे कौन ? माधुरता गर चाहिये, रखना सीखो मौन।।

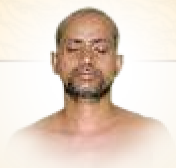

हिन्दी	क्रोध के आवेग में मौन रहना श्रेष्ठ है।
संस्कृत	क्रोधावेगे मौनमेव श्रेयम्।
प्राकृत	कोहावेगे वरं मोणं।
अपभ्रंश	कोहावेगे वरा मोणा।
मराठी	क्रोधाच्या आवेगात मौन राहणेच श्रेष्ठ आहे.
छत्तीसगढ़ी	गुस्सा मा गुमसुम भला।
गुजराती	ક્રોધ ના આવેગ માં મૌન રહવું શ્રેષ્ઠ છે.
तेलगु	కోపంతో ఉన్నప్పుడు మౌనం ధరించడమే శ్రేష్ఠం.
आंग्ल	*It is good to be quite while you are in anger.*
ब्राह्मीलिपि	𑀓𑁆𑀭𑁄𑀥 𑀓𑁂 𑀆𑀯𑁂𑀕 𑀫𑁂𑀁 𑀫𑁅𑀦 𑀭𑀳𑀦𑀸 𑀰𑁆𑀭𑁂𑀱𑁆𑀞 𑀳𑁃
पद्यानुवाद	आके क्रोध-क्रोध में, करत है स्वपर घात। क्रोध समय उत्तम कहा, रखें मौन सुख पात।।

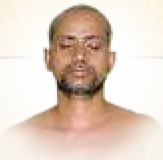

हिन्दी	मुनि बनो मौनी बनो परन्तु मुनि बनकर मुनीम नहीं बनो।
संस्कृत	मुनिर्भव मोनी भव, मुनिर्भूत्वा मुनीमो मा भूत्।
प्राकृत	मुणी हुव मोणी हुव, मुणी हविय मुणीमो ण हुव।
अपभ्रंश	मुणी हो मोणी हो, मुणी होइवि मुणीमु ण हो।
मराठी	मुनि बना, मौनी बना, परंतु मुनि बनुन मुनिम बनु नका .
छत्तीसगढ़ी	मुनि बनके मौनि बन लेकिन मुंशी मत बन।
गुजराती	મુનિ બનો મૌની બનો પરંતુ મુનિ બનીને મુનીમ નહીં બનશો.
तेलगु	సన్యాసి అవ్వు మౌని అవ్వు కానీ సన్యాసి అయిన తరువాత గణకుడు అవ్వకు.
आंग्ल	Be a monk, observe the vow of silence, but becoming a good monk do not be an accountant.
ब्राह्मीलिपि	[illegible]
पद्यानुवाद	मुनि बनकर, मौनी बनो, करना ध्यान असीम। मुनि बनकर रहना सदा, नहीं बनना मुनीम।।

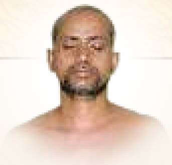

हिन्दी	परिवार नियोजन मत करो वासनाओं का नियोजन करो।
संस्कृत	न्यूनीकुरु वासनां न तु परिवारम्।
प्राकृत	परिवार–णियोजणं मा कुण, कुण वासना–णियोजणं।
अपभ्रंश	परिवार–णिओजण मा कर, कर वासणा णिओजण।
मराठी	परिवार नियोजन नका करू, वासनांचे नियोजन करा.
छत्तीसगढ़ी	परिवार नइ वासना सकेल।
गुजराती	પરિવાર નિયોજન નહીં કરો વાસનાઓં નો નિયોજન કરો.
तेलगु	కుటుంబ నియోజనం చేయకండి, వాసనాల నియోజనం చేయండి.
आंग्ल	Start planning to aloof from lusts instead of family planning.
ब्राह्मीलिपि	𑀧𑀭𑀺𑀯𑀸𑀭 𑀡𑀺𑀬𑁄𑀚𑀡 𑀫𑀢 𑀓𑀭𑁄 𑀯𑀸𑀲𑀦𑀸𑀑𑀁 𑀓𑀸 𑀡𑀺𑀬𑁄𑀚𑀡 𑀓𑀭𑁄॥
पद्यानुवाद	परिवार नियोजन करो, इसका छोड़ प्रचार। रोक वासना में रो, करके सोच विचार।।

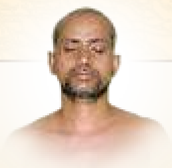

हिन्दी	राग ही कर पाओगे सुख कुछ भी नहीं पाओगे राख ही हो जाओगे।
संस्कृत	रागमेव कर्तव्यं सुखं किञ्चिदपि न पातव्यं भष्मीभविष्यति।
प्राकृत	रागो हु कायव्वो, किंचि वि सुहं ण लायव्वं भस्सो होस्सइ।
अपभ्रंश	रागु हु करेवा, किंचि वि सुह ण लहेवा, भस्सु होसए।
मराठी	रागच करू शकाल, राकु (थांबवु) काहीच शकत नाही, राखच होउन जाल .
छत्तीसगढ़ी	मया भर करले बचा नइ पाबे बिगार पक्का हे।
गुजराती	રાગ જ કરી શકશો; રાખી કંઇ પણ શકશો નહીં, રાખ જ થઇ જશો.
तेलगु	రాగమే చేయగలవు, ఏమి పెట్టుకోలేవు, రాశి అయిపోవు.
आंग्ल	You will able to do attachment only, will unable to accumulate anything, will transform to ashes only.
ब्राह्मीलिपि	[illegible]
पद्यानुवाद	राख तु है सकता नहीं, राग ही कर पाये। दुख तो हो पर सुख नहीं, राख ही हो जाये।।

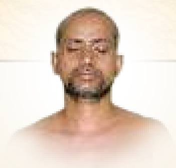

हिन्दी	बाण शरीर में लगता है वाणी हृदय में।
संस्कृत	बाणं भिनत्ति शरीरं वाणी हृदयम्।
प्राकृत	बाणो देहे वाणी हिदए लग्गइ।
अपभ्रंश	बाणु देहे वाणी हिदए लग्गए।
मराठी	बाण शरीरात लागतो, वाणी हृदयात.
छत्तीसगढ़ी	तीर देह ला चीरथे लेकिन बोली मनला चीर देथे।
गुजराती	વાણ શરીર માં લાગે છે, વાણી હૃદય માં.
तेलगु	బాణం శరీరంలో తగులుతుంది, మాటలు హృదయంలో తగులుతాయి.
आंग्ल	Arrow give pain to body but voice to heart.
ब्राह्मीलिपि	[illegible]
पद्यानुवाद	वाणी-णीणा है बने, बने न वाणी-वाण। वाण-देह वाणी हृदय, लगत लेत है प्राण॥

हिन्दी	आत्मा स्वपुरुषार्थ से ही परमात्मा बनता है।
संस्कृत	स्वपौरुषादेवात्मा परमात्मा भवति।
प्राकृत	सववसायोदो हु अप्पा परमप्पा होइ।
अपभ्रंश	सववसायाहे हु अप्पु परमप्पु होइ।
मराठी	आत्मा स्वपुरूषार्थाने च परमात्मा बनतो .
छत्तीसगढ़ी	मनखे खुदेले भगवान होथे।
गुजराती	આત્મા પોતાના પુરુષાર્થ થી જ પરમાત્મા બને છે.
तेलगु	ఆత్మ స్వయం యొక్క ప్రయత్నాలతోనే పరమాత్మ అవుతుంది
आंग्ल	The soul become pure soul only by self-valor.
ब्राह्मीलिपि	[illegible]
पद्यानुवाद	निज स्वभाव में जो रहे, वही जानत आत्मा। स्वपुरुषार्थ कर आत्मा, बनत हैं परमात्मा।।

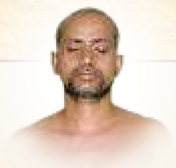

हिन्दी	जैन-दर्शन में सल्लेखना को जीवन का श्रृंगार कहा गया है।
संस्कृत	सल्लेखना जीवशृङ्गारोक्ता जैने।
प्राकृत	जेण्ह-दंसणे भणियो-सल्लेहणं जीव-सिंगारो।
अपभ्रंश	जेण्हमए भणिउसल्लेहणा जीवसिंगारु।
मराठी	जैन-दर्शन सल्लेखनाला जीवनाचा श्रृंगार म्हणतो .
छत्तीसगढ़ी	जइनी मन समाधी मरन ला जीवन के गहना बोलथे।
गुजराती	જૈન દર્શન માં સલ્લેખના ને જીવન નુ શ્રૃંગાર કિધુ છે.
तेलगु	జైన దర్శనంలో సల్లేఖనం జీవనం యొక్క అలంకారం అనబడును.
आंग्ल	In Jainology, voluntary death by gradual fasting is defined as an adornment of life.
ब्राह्मीलिपि	[illegible]
पद्यानुवाद	जिन-दर्शन में है कहा, छोड़ो तन-श्रृंगार। व्रत-सल्लेखना को कहा, जीवन का श्रृंगार।।

हिन्दी	मानसिक क्षमताओं का नाशक अब्रह्म है।
संस्कृत	मानसिकसामर्थ्यनाशकमब्रह्मं।
प्राकृत	माणसिग-सामत्थ-णासगो अबंभो।
अपभ्रंश	माणसिय-सामत्थ-णासगु अबंभु।
मराठी	मानसिक क्षमतांचा नाशक अब्रह्म आहे .
छत्तीसगढ़ी	दिमागी लायकी के गिरइया एब।
गुजराती	માનસિક ક્ષમતાઓ નો નાશક અબ્રહ્મ છે.
तेलगु	మానసిక సామర్థ్యాల నాశకుడు అబ్రహ్మచర్యుడు.
आंग्ल	The destructor of mental capabilities is an unchastity.
ब्राह्मीलिपि	[illegible]
पद्यानुवाद	ब्रह्माभाव करती सदा, मन क्षमता अतिवीर। अब्रह्म भाव हरती सदा, मन क्षमता गंभीर।।

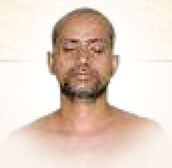

हिन्दी	तन के काले तो मोक्ष जा सकते हैं, पर मन के काले नहीं।
संस्कृत	मोक्षं गच्छेच्छ्यामः तनस्य न तु मनसः।
प्राकृत	तणुस्स सामा मोक्खं गंतव्वो ण दु चित्तस्स।
अपभ्रंश	तणस्सु सामा मोक्खु गच्छेवा ण तु चित्तस्सु।
मराठी	काळ्या शरीराचे लोक मोक्ष जावू शकतात, पण काळ्या मनाचे नाही.
छत्तीसगढ़ी	तन के करिया ता भगवान बन सकथे, पर मन के करिया के कोनो ठौर नइ हे।
गुजराती	તન ના કાળા તો મોક્ષ જઇ શકે પર મન ના કાળા નથી.
तेलगु	శరీరంతో నల్లగా ఉన్నవాళ్ళు మొక్ష వెళ్ళగలరు కాని మనస్సుతో నల్లగా ఉన్నవాళ్ళు కాదు.
आंग्ल	Whose body is black can attain to salvation, but not an evil minded one.
ब्राह्मीलिपि	𑀢𑀦 𑀓𑁂 𑀓𑀸𑀮𑁂 𑀢𑁄 𑀫𑁄𑀓𑁆𑀱 𑀚𑀸 𑀲𑀓𑀢𑁂 𑀳𑁃𑀁 𑀧𑀭 𑀫𑀦 𑀓𑁂 𑀓𑀸𑀮𑁂 𑀦𑀳𑀻𑀁 𑁇
पद्यानुवाद	तन काला होना भला, मन काला ना होय। तन काला शिवपुर वसे, मन का कुछ ना होय।।

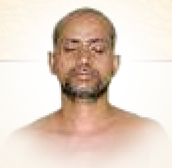

हिन्दी	कण – कण स्वतंत्र है।
संस्कृत	स्वातन्त्र्यं सामग्र्यम्।
प्राकृत	सततं समग्गं।
अपभ्रंश	सतंता समग्गा।
मराठी	कण–कण स्वतंत्र आहे .
छत्तीसगढ़ी	कोई काखरो बंधुआ नो हे।
गुजराती	કણ - કણ સ્વતંત્ર છે.
तेलगु	అన్ని సామగ్రాలు స్వాతంత్ర్యమే.
आंग्ल	Every person and everything is an independent.
ब्राह्मीलिपि	𑀓𑀡 𑀓𑀡 𑀲𑁆𑀯𑀢𑀁𑀢𑁆𑀭 𑀳𑁃 ॥ ॥
पद्यानुवाद	अणु–अणु सब मिलते दिखे, फिर भी ना परतंत्र। मानो चाहे आप कुछ, कण–कण होत स्वतंत्र।।

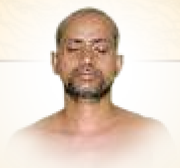

हिन्दी	सर्वगुणों में प्रधान गुण विनय गुण है।
संस्कृत	सर्वेषु गुणेषु प्राधान्यो विनयः।
प्राकृत	णिहिलेसु पहाणं विणयगुणं।
अपभ्रंश	णिहिलाहिं पहाण विणयगुण।
मराठी	सर्व गुणात प्रधान गुण विनय गुण आहे .
छत्तीसगढ़ी	सब्बो अच्छाई मा अगुआ विनम्रता हे।
गुजराती	સઘળા ગુણો માં મુખ્ય। પ્રધાન ગુણ વિનય ગુણ છે.
तेलगु	అన్ని గుణాలలో ప్రధానమైన గుణం వినయం.
आंग्ल	*In all the qualities, quality of modesty is at the top.*
ब्राह्मीलिपि	𑀲𑀯𑁆𑀯𑀕𑀼𑀡𑁄𑀁 𑀫𑁂𑀁 𑀧𑁆𑀭𑀥𑀸𑀦 𑀕𑀼𑀡 𑀯𑀺𑀦𑀬 𑀕𑀼𑀡 𑀳𑁃
पद्यानुवाद	विनय-भाव बिन कुछ नहीं, नहीं कोई महान। सभी गुणों की शान हैं, विनय भाव प्रधान।।

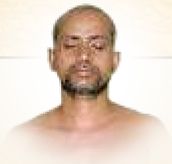

हिन्दी	कुछ कामना में मर गये, कुछ कामिनी के लिए, जो कामना कामिनी छोड़ गये, वे संसार से तिर गये।
संस्कृत	केचिद् हताः कामनायां, केचिद् कामिन्यै उभयत्यागिनस्तीणास्ते भवात्।
प्राकृत	केइ कामणाए केइ कामिणीए हदो, जे उहयचागी हदो, ते भवादु।
अपभ्रंश	कोवि कामणाहिं कोवि कामिणीहिं हदो, जु उहयचागी हदो ता भवाहु।
मराठी	काही इच्छा करत मेले, काही इच्छुकांसाठी, जे इच्छा, इच्छुक सोडून गेले ते संसार पार झाले .
छत्तीसगढ़ी	कुच्छु कामना मा मरिस, कुच्छु कामति मा, जो दोन्नो ले बचिस, ता संसार ले बचिस।
गुजराती	કોઈ કામના માં મરી ગયા, કોઈ કામિની માટે; જે કામના કામિની છોડી ગયા, તે સંસાર થી તિરી ગયા.
तेलगु	కొందరు కోరికలో మరణించారు, కొందరు కోరికల కోసం మరణించారు. ఎవరైతే కోరికలో, కోరికల కోసం జీవన్ని వదిలారో, వారే సంసార సముద్రాన్ని దాటేరు (దాటగలరు).
आंग्ल	Some dies because of desires, some because of damsels, those who gave up desires & damsels, attain to salvation.
ब्राह्मीलिपि	[illegible]
पद्यानुवाद	कामना और कामिनी, वजह मरण की जान। इन दो को जो भी तजे, करता भव उत्तान।।

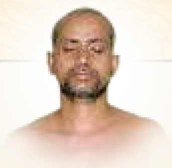

हिन्दी	माँगने पर क्षमा करना क्षमा है, बिना माँगे क्षमा कर देना उत्तम क्षमा है।
संस्कृत	याचानायां क्षमाकरणं क्षमा, नाना याचनायाः तूत्तमा।
प्राकृत	जायणाए खमाकरणं खमा, अंतरेण जायणाए दु उत्तमखमा।
अपभ्रंश	जायणाहिं खमाकरण खमा, विणा जायणाए तु उत्तमखमा।
मराठी	मागितल्यावर क्षमा करणे क्षमा आहे, बिना मांगता क्षमा करणे उत्तम क्षमा आहे .
छत्तीसगढ़ी	मंगइया ला माफि देना ''क्षमा'' हे, मांगे बिना माफिदेना ''उत्तम क्षमा'' हे।
गुजराती	માંગવા પર ક્ષમા કરવું ક્ષમા છે, વગર માંગે ક્ષમા કરી દેવું ઉત્તમ ક્ષમા છે.
तेलगु	అడిగినప్పుడు క్షమించడం క్షమ, కానీ అడుగకముందే క్షమించడం ఉత్తమక్షమ.
आंग्ल	To forgive on demand is a forgiveness, but to forgive without demand is a supreme forgiveness.
ब्राह्मीलिपि	[illegible]
पद्यानुवाद	माँगन पर जो है मिले, क्षमा भाव का दान। बिन कहे क्षमा जो करे, उत्तम क्षमा निदान।।

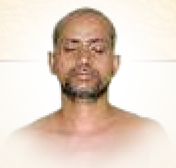

हिन्दी	हे मित्र ! यथार्थ ज्ञानीपना विरक्तिमें निहित है ।
संस्कृत	मित्र ! निहितं यथार्थज्ञानित्वं विरक्तौ ।
प्राकृत	मित्त ! सम्मं णाणित्तं विरत्तीए णिहिदं ।
अपभ्रंश	मित्त ! सम्म णाणित्तु विरत्तीहिं णिहिद ।
मराठी	हे मित्र ! यथार्थ ज्ञानीपणा विरक्तित निहित आहे .
छत्तीसगढ़ी	हे जहुरिया ! असल समझदारी वैराग मा लुके रहिथे ।
गुजराती	હે મિત્ર ! હકીકતમાં જ્ઞાનીપણો વિરક્તિમાં નિહિત છે.
तेलगु	ఓ మిత్రుడు ! సత్యమైన జ్ఞానత్వం విరక్తిలో నిహితమైనది
आंग्ल	O, Friends ! Actual knowledgeableness is indulge in separation.
ब्राह्मीलिपि	[illegible]
पद्यानुवाद	विषय–भोग से दूर है, हे मित्र ! यह पहिचान । अनासक्ति में निहित है, ज्ञानीपन का ज्ञान ।।

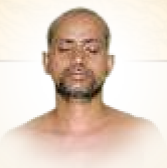

हिन्दी	विवेकी बासा दिन नहीं जीता, वह मुर्दे को काँधे पर नहीं ढोता।
संस्कृत	विवेकी न हि जीवति व्यतीतदिवसं, स न मृतं वहति कङ्कते।
प्राकृत	विवगी णेव जीवइ अदीददिवसं, स ण सवं वहद कंधे।
अपभ्रंश	विवेगि ण जीवए अदीददिवस, सु ण सवु वहए कंधे।
मराठी	विवेकी शिळा दिवस जगत नाही, तो प्रेताला खाद्यावर उचलत नाही .
छत्तीसगढ़ी	बुझक्कड़, एक गलती दुबारा नइ करे।
गुजराती	વિવેકી વાસી દિવસ નથી જીવતો, તે મુર્દા ને કાંધા પર નથી ઢોવતો.
तेलगु	వివేకుడు వ్యతీత దినాలలో జీవించడు, అతడు శవాని భుజంపై భరించడు .
आंग्ल	Discerning person does not live a stale day. He does not cart dead on shoulders.
ब्राह्मीलिपि	𑀯𑀺𑀯𑁂𑀓𑀻 𑀩𑀸𑀲𑀸 𑀤𑀺𑀦 𑀦𑀳𑀻𑀁 𑀚𑀻𑀢𑀸, 𑀯𑀳 𑀫𑀼𑀭𑁆𑀤𑁂 𑀓𑁄 𑀓𑀥𑁂 𑀧𑀭 𑀦𑀳𑀻𑀁 𑀠𑁄𑀢𑀸।
पद्यानुवाद	ज्ञानी जियत न भूत में, ना देखत है भूत। वर्तमान में खुश रहे, ना ढोवत है भूत।।

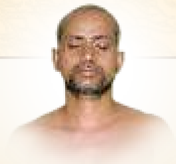

हिन्दी
मुमुक्षु ! वात्सल्य के बिना क्षमा नहीं दी जा सकती है, क्षमा माँगने के लिए नम्रता और सरलता का होना आवश्यक है।

संस्कृत
मुमुक्षो ! बिना वात्सल्येन न क्षमा दातुं शक्या, क्षमायाचनार्थै नम्रता सरलता चावश्यका।

प्राकृत
मुमुक्खु ! वच्छल्लेण विणा खमा ण होइ, खमा जायणाए णम्मत्तं सरलत्तं चआवस्सं।

अपभ्रंश
मुमुक्खु ! वच्छल्लेण विणा खमा ण होइ, खमा जायणाहे णम्मत्तु सरलत्तु य आवस्सगु।

मराठी
मुमुक्षु ! वात्सल्याशिवाय क्षमा दिली जात नाही, क्षमा मागण्यासाठी नम्रता आणि सरळता आवश्यक आहे .

छत्तीसगढ़ी
ए मुमुच्छु ! दया बिना माफि नइ होय। माफि मंगइया बर सीधा अउ सरल होना जरूरी हे।

गुजराती
મુમુક્ષુ ! વાત્સલ્ય વિના ક્ષમા દઈ શકાતી નથી, ક્ષમા માંગવા માટે નમ્રતા અને સરળતા નું હોવું જરૂરી છે.

तेलगु
ఓ ముముక్షు ! వాత్సల్యం లేకుండా క్షమించడం కాదు. క్షమ అడగడానికి నమ్రత్వం, సరళత్వం ఉండటం ఆవశ్యం.

आंग्ल
O, Desirous of salvation! Without affection, apology can't be given; for apology, politeness and simplicity requires.

ब्राह्मीलिपि
[illegible]

पद्यानुवाद
क्षमा लेन अरू देन में, चाहिए वात्सल्य अंग।
हृदय सरलता चाहिए, अरू विनय भी संग।।

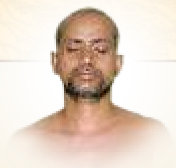

हिन्दी	हे मित्र ! जितनी सरलता है, उतनी साधुता है।
संस्कृत	मित्र ! यावत्सरलता तावत्साधुता।
प्राकृत	मित्त ! जद्देहि सरलत्तं तद्देहि साहुत्तं।
अपभ्रंश	मित्त ! जद्देहि सरलत्तु तद्देहि साहुत्तु।
मराठी	हे मित्र ! जेवढी सरळता आहे, तेवढी साधुता आहे .
छत्तीसगढ़ी	मितान सुन ! सरलता बरोब्बर सज्जनता होथे।
गुजराती	હે મિત્ર ! જેટલી સરળતા છે, તેટલી સાધુતા છે.
तेलगु	ఓ మిత్రుడు ! ఎంత సరళత్వం ఉంటుందో అంత సాధుత్వం ఉంటుంది.
आंग्ल	O, Friend! As simplicity as sainthood.
ब्राह्मीलिपि	𑀳𑁂 𑀫𑀺𑀢𑁆𑀭 ! 𑀚𑀺𑀢𑀦𑀻 𑀲𑀭𑀮𑀢𑀸 𑀳𑁃 𑀉𑀢𑀦𑀻 𑀲𑀸𑀥𑀼𑀢𑀸 𑀳𑁃 ॥४९॥
पद्यानुवाद	सरल भावना है रहे, जिसमें जितनी होत। साधूपन की साधुता, उसमें उतनी होत।।

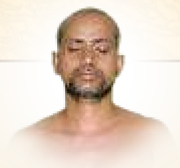

हिन्दी	भो मुमुक्षु ! जानने की इच्छा भी कषाय है।
संस्कृत	भो मुमुक्षो ! ज्ञीप्सापि कषायः।
प्राकृत	भो मुमुक्खु ! णत्ति–इच्छा कसायो।
अपभ्रंश	भो मुमुक्खु ! णत्ति–इच्छा कसायु।
मराठी	भो मुमुक्षु ! जाणण्याची इच्छा पण कषाय आहे .
छत्तीसगढ़ी	मुच्छु सुनना ! जानकारी के इच्छा तको कसाय हे।
गुजराती	ભો મુમુક્ષુ ! જાણવા ની ઇચ્છા પણ કષાય છે.
तेलगु	ఓ ముముక్షు ! తెలుసుకోవాలనే కోరిక కూడా కషాయం.
आंग्ल	O, Desirous of salvation ! Intention of knowing is also a kind of passion.
ब्राह्मीलिपि	[illegible]
पद्यानुवाद	जानन की जो भावना, मन में चाह बसाए। इच्छा ऐसी राखना, जानो उसे कषाय।।

हिन्दी	चारित्र से च्युत, अपने आपको मुनि समझने वाला भी मिथ्यादृष्टि है।
संस्कृत	चारित्रच्युतं स्वं मुनिं मन्यमानो मिथ्यादृष्टि:।
प्राकृत	चरित्त–चुओ सगं मुणी मुणमाणो वि मिच्छाइट्ठी।
अपभ्रंश	चरित्त–चुउ सगु मुणी मुणमाणु वि मिच्छाइट्ठी।
मराठी	चारित्र्याहून च्युत, स्वत:ला मुनि समजणारा पण मिथ्यादृष्टि आहे .
छत्तीसगढ़ी	चरित्र छुट्टा, खुदेच्च ला मुनि मनईया संसार घुमइया।
गुजराती	ચારિત્ર થી ચ્યુત, પોતાને મુનિ સમજવાવાળો પણ મિથ્યાદૃષ્ટિ છે.
तेलगु	చారిత్రంతో వ్యతిరేకుడు, తనను తాను సన్యాసి అనుకునే వాడు కూడా మిథ్యా దృష్టి కలవాడు.
आंग्ल	Being falling from conduct, he - who treat himself as an ascetic, is a wrong believer.
ब्राह्मीलिपि	𑀘𑀸𑀭𑀺𑀢𑁆𑀭 𑀲𑁂 𑀘𑁆𑀬𑀼𑀢, 𑀅𑀧𑀦𑁂 𑀆𑀧𑀓𑁄 𑀫𑀼𑀦𑀺 𑀲𑀫𑀛𑀦𑁂 𑀯𑀸𑀮𑀸 𑀪𑀻 𑀫𑀺𑀣𑁆𑀬𑀸𑀤𑀾𑀱𑁆𑀝𑀺 𑀳𑁃।
पद्यानुवाद	अपने को जो मुनि कहे, चारित्र का पथ छोड़। मिथ्यादृष्टि वो जानिये, उनको ना कर जोड़।।

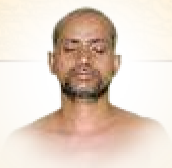

हिन्दी	जैन तत्त्व ज्ञान की आधार शिला है–व्यक्ति स्वातंत्रयता और स्वावलंबनपना।
संस्कृत	जैनतत्त्वज्ञानस्याधारशिला व्यक्तिस्वातन्त्रयं स्वावलम्बनत्वं च।
प्राकृत	जीव सतंतत्तं सावलंबणत्तं च जेण्हतत्तणाण–आधारसिला।
अपभ्रंश	जीव–सतंतत्तु सावलंबणत्तु य जेण्हतत्तणाण–आधारशिला।
मराठी	जैन तत्वज्ञानाची अधार शीला–व्यक्ति स्वातंत्रता आणि स्वावलंबनपणा .
छत्तीसगढ़ी	जइन तत्वविद्या के जर हवे–आदमी के आजादी अउ आत्मनिर्भरता
गुजराती	જૈન તત્વ જ્ઞાન ની આધાર શિલા છે - વ્યક્તિ સ્વતંત્રતા અને સ્વાવલંબનપણો .
तेलगु	జైన తత్వజ్ఞానం యొక్క ఆధార శిల - వ్యక్తి స్వాతంత్ర్యత మరియు స్వ అవలంబన .
आंग्ल	The foundation of Jaina metaphysics is a freedom of a person and self - relianceship.
ब्राह्मीलिपि	𑀚𑁃𑀦 𑀢𑀢𑁆𑀯 𑀚𑁆𑀜𑀸𑀦 𑀓𑀻 𑀆𑀥𑀸𑀭 𑀰𑀺𑀮𑀸 𑀳𑁃 - 𑀯𑁆𑀬𑀓𑁆𑀢𑀺 𑀲𑁆𑀯𑀸𑀢𑀁𑀢𑁆𑀭𑀬𑀢𑀸 𑀑𑀭 𑀲𑁆𑀯𑀸𑀯𑀮𑀁𑀩𑀦𑀧𑀦𑀸॥
पद्यानुवाद	जैनतत्त्व में ज्ञान की, बनी हुई दोजान। प्रथम स्वतंत्रता भली, रू स्वावलंबन ज्ञान।।

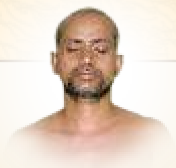

हिन्दी
हे मित्र ! सम्यक् श्रद्धा, समीचीन ज्ञान और निर्मल चारित्र की पूर्णता का नाम ईश्वर है।

संस्कृत
मित्र ! सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रसामग्र्यं नाम ईश्वर।

प्राकृत
हे मित्त ! सुदंसणणाणं–णिम्मलचारित्तंसमग्गत्तं णाम ईसरो।

अपभ्रंश
हे मित्त ! सम्म–दंसणणाण–णिम्मलचारित्त समग्गत्तु णाम ईसरु।

मराठी
हे मित्र ! सम्यक् श्रद्धा समीचिन ज्ञान आणि निर्मल चारित्र यांच्या पूर्णतेचे नाव–ईश्वरआहे .

छत्तीसगढ़ी
ए मितान ! सच्चा सरधा, जानकारी और चरित जब पुरा होथे ता ओखरे नाव भगवान हे।

गुजराती
હે મિત્ર ! સમ્યક્ શ્રદ્ધા, સમીચીન જ્ઞાન અને નિર્મળ ચારિત્ર ની પૂર્ણતાનું નામ ઈશ્વર છે.

तेलगु
ఓ మిత్రుడు ! సమ్యక్ మైన శ్రద్ధ, సమీచీనమైన జ్ఞానము మరియు నిర్మలమైన చరిత్ర పూర్తైనే ఈశ్వరుడు అంటారు.

आंग्ल
O, Friends ! The completeness of right faith, right knowledge and pure conduct can be define as God (pure & perfect soul).

ब्राह्मीलिपि
[illegible]

पद्यानुवाद
सम्यक्–श्रद्धा ज्ञान अरू, होत चारित्र स्वरूप।
रत्नात्रय की पूर्णता, है ईश्वर का रूप।।

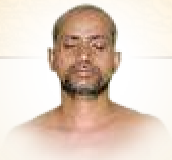

हिन्दी — आत्म साधक के लिए धन की कोई कीमत नहीं, जिसकी दृष्टि में सम्पत्ति श्रेष्ठ है, उसे तो मोक्ष मार्ग से च्युत ही समझना चाहिए।

संस्कृत — आत्मसाधकाय धनस्य मूल्यं नास्ति यद् दृष्टौ सम्पत्तिश्श्रेया सो ज्ञातव्यः मोक्षमार्गच्युतः ।

प्राकृत — अप्पसाहगस्स धणस्स ण केइ मुल्लं, अस्सदिट्ठीए धणं वरं ते मोक्खमग्ग–चुओ णेयो।

अपभ्रंश — अप्पसाहगस्सु धणस्सु ण केइ मुल्ल, जासु दिट्ठीहिं संपत्ती वरा ता मोक्खमग्ग–चुउ जणेवा।

मराठी — आत्मसाधकासाठी धनाची काही किंमत नाही, ज्याच्या दृष्टित सम्पत्ति श्रेष्ठ आहे त्याला तर मोक्षमार्गातून च्युत च समजा .

छत्तीसगढ़ी — संयम सधइया बर पइसा के कोनो मोल नइ हे, जेखर नजर मा मोल हे वो मोक्ष जवइया नो हे।

गुजराती — આત્મ સાધક માટે ધન નો કોઈ કીમત નથી, જેઓની દ્રષ્ટિ માં સમ્પત્તિ શ્રેષ્ઠ છે, તેઓ તો મોક્ષ માર્ગ થી ચ્યુત જ સમજવું જોઈયે.

तेलगु — ఆత్మ సాధకుని కోసం ధనం యొక్క ఏ మూల్యం విలువ లేదు, ఎవరైతే దృష్టిలో ఐశ్వర్యమే శ్రేష్ఠమో వారు మోక్ష మార్గంతో చ్యుతులు అనుకోవాలి.

आंग्ल — There is no importance of wealth for true saints, those who give importance to wealth should be treated as fallen from the righteous path.

ब्राह्मीलिपि — [illegible]

पद्यानुवाद — आतम का साधक नहीं, धन महत्व को देत।
जो महत्व देकर रहे, मोक्ष दूर कर लेत।।

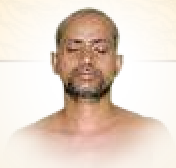

हिन्दी	मित्र ! तुम भीतर जाओ, तो तुम भी तर जाओ।
संस्कृत	मित्र ! त्वमन्तरङ्गं गच्छ, त्वं तर।
प्राकृत	मित्त ! तुं अंदरं गच्छ, तुं पि तर।
अपभ्रंश	मित्त ! तुहुं अंदरु गच्छ, तुहुं वि तर।
मराठी	मित्र ! तु स्वता:त आत जा, तु पण मोक्षात जा .
छत्तीसगढ़ी	हे मितान ! तें परले घूंच ता ते संसार घूंच जाबे।
गुजराती	મિત્ર ! તમે અંદર જાઓ, તો તમે પણ તરી જાઓ.
तेलगु	ఓ మిత్ర ! నువ్వు లోపలికి వెళ్ళు, అప్పుడు నువ్వుకూడా సంసార సముద్రాన్ని దాటగలవు.
आंग्ल	O, Friend! Go inside to avoid reincarnation.
ब्राह्मीलिपि	[illegible]
पद्यानुवाद	निज में रमकर जो रहे, उत्तम सुख वो पात। जो निज भीतर जात है, हे वो भी–तर जात।।

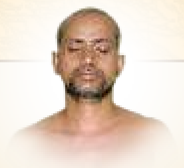

हिन्दी	जैन धर्म का मुख्य धरातल करुणा ही है, अपने साथ – साथ समस्त जीवों पर।
संस्कृत	जैनधर्मणो मुख्याधरा करुणैव स्वेन सह सर्वजीवेषु।
प्राकृत	सगेण सह णिहिलेसु करुणा एव जेण्ह–धम्मस्स मुक्ख धरा।
अपभ्रंश	णिएण सह णिहिलाहिं करुणा एव जेण्ह–धम्मस्सु मुक्खधरा।
मराठी	जैन धर्माची आधार–शीला करूणा च आहे, आपल्याबरोबर सर्व जीवांवर .
छत्तीसगढ़ी	जइन धरम के जर दया हे अपन संग–संग जम्मो बर।
गुजराती	જૈન ધર્મ નો મુખ્ય ધરાતલ કરુણા જ છે, પોતા ની સાથે બધા જીવો પર.
तेलगु	జైన్ ధర్మ యొక్క ముఖ్యమైన ఆధారం దయ, స్వయంతో పాటు మరియు సమస్త జీవనాలపై.
आंग्ल	*Main ideology of Jainism is compassion towards all the creatures of the world.*
ब्राह्मीलिपि	𑀚𑁃𑀦 𑀥𑀭𑁆𑀫 𑀓𑀸 𑀫𑀼𑀔𑁆𑀬 𑀥𑀭𑀸𑀢𑀮 𑀓𑀭𑀼𑀡𑀸 𑀳𑀻 𑀳𑁃, 𑀅𑀧𑀦𑁂 𑀲𑀸𑀣-𑀲𑀸𑀣 𑀲𑀫𑀲𑁆𑀢 𑀚𑀻𑀯𑁄𑀁 𑀧𑀭𑁇
पद्यानुवाद	करुणा को है जानिये, जैन धर्म की नींव। जो अपने के साथ में, सदा बचावत जीव।।

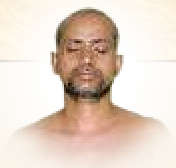

हिन्दी — सांसारिक रिश्ते सब शरीर के होते हैं। क्या बेटे की आत्मा को आपने जन्म दिया है ? नहीं, उसके शरीर को जन्म दिया है, इसलिए सारे रिश्ते शरीर के हैं, आत्मा का कोई रिश्ता नहीं होता।

संस्कृत — सर्वः सांसारिकसम्बनधः शरीरस्य–किं पुत्रस्यात्मा भवता जातः ?
न हि तस्य शरीरो जातः, अतः सर्वः सम्बन्धः शरीरस्य न त्वात्मनः।

प्राकृत — सयल–संसारिग–संबंधो देहस्य। किं पुत्तस्स अप्पं भवेण जणीदो ?
णेव तस्स देहं जणीदो, तम्हा सयल–संबंधो देहस्स, ण दु अप्पस्स।

अपभ्रंश — सयलसंसारिग–संबंधु देहस्सु। किं पुत्तस्सु अप्पु भवेण जणीदु ?
ण तस्सु देह जणीदु तम्हा सयलसंबंधु देहस्सु, ण तु अप्पस्सु।

मराठी — सांसारिक नाते शरीराश्रित आहे, काय तुम्ही मुलाच्या आत्म्याला जन्म दिला आहे ? नाही; त्याच्या शरीराला जन्म दिला आहे, म्हणून सर्व नाते शरीराश्रित आहे, आत्म्याचे काही नाते नाही.

छत्तीसगढ़ी — जम्मो रिस्तानाता शरीर के होथे। न तो टुरा के शरीर ला पैदा कर सकथस और न ओखर जीव ला। एखर सेति जम्मो रिस्तानाता शरीर के होथे। जीव के कोने रिस्तेदारी नइ होवए।

गुजराती — [illegible]

तेलगु — [illegible]

आंग्ल — *All the relationships of the world is of body only. Would you have given birth to your son's soul? No, you gave a birth to his body only. Thus all the relationships are of body, not of soul.*

ब्राह्मीलिपि — [illegible]

पद्यानुवाद —
देह संबन्धी से कहें, अपने–अपने बोल।
आतम ना कोई जने, ना आतम को बोल।।

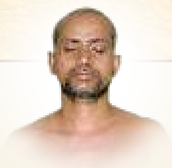

हिन्दी	'मेरी भावना' पढ़ते हैं – 'सुखी रहें सब जीव जगत के' यह भावना भाने वाला दूसरों पर कैसे क्रोध कर सकता है ?
संस्कृत	'मम भावनां' पठन्ति–सुखीनोभव सर्वे जीवा जगतः– इतीयं भावना भावयमानः परेषु कथं क्रुध्येत्।
प्राकृत	'मम भावणाए' पठंति–'हरिसेउ सयलजीवा जगस्स', इमा भावणाकारो अण्णेसु कहं कोहो कुणइ।
अपभ्रंश	मज्झु भावणा पढंति–'हरिसउ सयलजीवा जगस्सु', इसु भावणाकारु अण्णाहिं कह कोहु करइ।
मराठी	आपण मेरी भावना वाचतो–'सुखी रहें सब जीव जगत के..' ही भावना करणारा क्रोध कसा करू शकतो .
छत्तीसगढ़ी	मेरी भावना पढ़थन–सुखी रहे सब जीव जगत के ऐसन सुग्घर भाव के करइया दूसर ऊपर कइसन गुस्सा करही ?
गुजराती	અમે 'મેરી ભાવના' વાંચે છે – સુખી રહે સબ જીવ જગત કે ... આ ભાવના ભાવવા વાળો બીજાઓ પર કેવી રીતે ક્રોધ કરી શકે ?
तेलगु	"నా భావనా" లో చదువుతాము - "సకలలోకంలోని జన్తు జీవులు సుఖంగా ఉండాలి". ఈ భావనా కలిగినవాడు ఎలా ఇతరులపై క్రోధం చేయగలడు!
आंग्ल	Those who read 'Meri Bhāwanā-Sukhi rahein sab jeeva jagat ke'. A person who has such feeling, how can do anger on others?
ब्राह्मीलिपि	[illegible]
पद्यानुवाद	पढ़कर मेरी भावना, जाग गया ये बोध। सुखी जगत् के जीव हों, फिर उनपर क्यों क्रोध ?

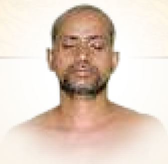

हिन्दी	मित्र ! शांति से पुरुषार्थ करो, सफलता सब कह देगी।
संस्कृत	मित्र ! शान्तितः पुरुषार्थं कुरु, सफलता सर्वं वक्ष्यति।
प्राकृत	मित्त ! संतिदो कुण ववसायो, सफलदा सव्वा भासिस्सइ।
अपभ्रंश	मित्त ! संतिदु कर उज्जमु, सिद्धी सव्वाउ भासेसइ।
मराठी	मित्र ! शांतिने पुरूषार्थ करा, सफलता सर्व काही बोलेल .
छत्तीसगढ़ी	मितान ! चुपके चुपके मोहनत कर। परिणाम सब्बो बोलहि।
गुजराती	મિત્ર ! શાંતિ થી પુરુષાર્થ કરો, સફળતા બધુ કહી દેશે.
तेलगु	ఓ మిత్రుడు ! శాంతితో ప్రయత్నాలు చేయు, ఫలం అంత చెప్పుస్తుంది
आंग्ल	O, Friend ! Silent effort will fetch success.
ब्राह्मीलिपि	[illegible]
पद्यानुवाद	पुरुषारथ करते रहो, धैर्य बना कर काज। बिना कहे सब कह रही, बनत सफलता ताज।।

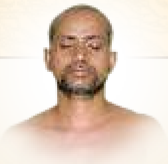

हिन्दी	मित्र ! आज हम सब दुखी हैं, क्योंकि स्वयं आत्मा के प्रति अनजान हैं।
संस्कृत	मित्र ! अद्य वयं सर्वे दुखिनो, यतः स्वस्यात्मानं न जानीमः।
प्राकृत	मित्त ! अज्ज वयं णियप्पं पडि अणजाणं तम्हा दुक्खिदं।
अपभ्रंश	मित्त ! अज्ज अम्हे णियप्पु पडि अणजाण तम्हा दुक्खिद।
मराठी	मित्र ! आज आपण सगळे दु:खी आहोत, कारण स्वयं आत्म्याप्रति अनविज्ञ आहोत.
छत्तीसगढ़ी	मितान ! आज सब्बो दुखारी हे काबर कि खुदके चिन्हारी नइ हे।
गुजराती	મિત્ર ! આજ અમે બધા દુખી છે, કેમકે પોતાની આત્મા ના પ્રતિ અણભિજ્ઞ છે.
तेलगु	ఓ మిత్రుడు। ఈరోజు మనమందరం దు:ఖంగా ఉన్నాము ఎందుకంటే స్వయం యొక్క ఆత్మ గురించి మనకు ఏమి తెలియదు.
आंग्ल	O, Friend ! An ignorance towards knowledge of soul, in case of sorrows.
ब्राह्मीलिपि	[illegible]
पद्यानुवाद	अब-तक होते हम रहे, आतम से अनजान। दु:ख का कारण एक है, इसको मि ! पहचान।।

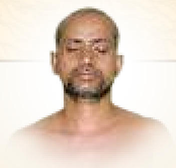

हिन्दी	मित्र ! सभी दिन एक नहीं होते, सभी के दिन एक नहीं होते।
संस्कृत	मित्र ! सर्वेषां सर्वाणि च दिनानि नो समानानि।
प्राकृत	मित्त ! सव्वाणि दिवसाणि णो समाणं, सव्वेसिं दिवसाणि णो समाणं।
अपभ्रंश	मित्त ! सव्वाइं दिवसाइं ण समाण, सव्वाहं दिवसाइं ण समाणं।
मराठी	मित्र ! सगळे दिवस एकसारखे नसतात, सगळ्यांचे दिवस एक–सारखे नसतात .
छत्तीसगढ़ी	मितान ! सब्बो दिन एके असन नइ होवे, अउ जम्मों के दिन एके असन नइ होवे।
गुजराती	મિત્ર ! બધા દિવસ એક સારખા નથી હોય, બધાના દિવસ એક સારખા નથી છે.
तेलगु	ఓ మిత్రుడు ! అన్ని రోజులు ఒకేలా ఉండవు, అందరి రోజులు ఒకేలా ఉండవు.
आंग्ल	O, Friend ! Every day is not same, everyone's days are not same.
ब्राह्मीलिपि	𑀫𑀺𑀢𑁆𑀭! 𑀲𑀪𑀻 𑀤𑀺𑀦 𑀏𑀓 𑀦𑀳𑀻𑀁 𑀳𑁄𑀢𑁂, 𑀲𑀪𑀻 𑀓𑁂 𑀤𑀺𑀦 𑀏𑀓 𑀦𑀳𑀻𑀁 𑀳𑁄𑀢𑁂॥६१॥
पद्यानुवाद	तुम मन में समता धरो, काहे को हो रोत ? सबके दिन नहीं एक हैं, सब दिन एक ना होत।।

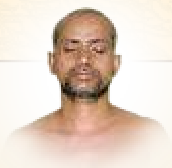

हिन्दी	अपनी छवि अपनों में उठाने की आकांक्षा ही साधक के लिए बाधक है।
संस्कृत	स्वस्य व्यक्तित्वं स्वेषु वर्धमानस्याकाङ्क्षैव साधकाय बाधकः।
प्राकृत	णियछविं णिएसु वड्ढमाणस्स–आकंखा साहगस्य बाहगो।
अपभ्रंश	णियछवि णियाहिं वड्ढमाणासु आकंखा साहगासु बाहगु।
मराठी	आपले व्यक्तित्व आपल्यात उंचावण्याची आकांक्षा च साधकासाठी बाधक आहे.
छत्तीसगढ़ी	अपन मन के बीच मा ऊँचा दरजा के इच्छा साधक बर अडंगा हे।
गुजराती	પોતાની છબિ આપણાઓમાં ઉઠાવવા ની આકાંક્ષા જ સાધક માટે બાધક છે.
तेलगु	మన వ్యక్తిత్వాని మనవారిలో వర్ధమానం చేయాలనే కోరిక సాధకుని కోసం బాధకం కలుగుతుంది.
आंग्ल	Self appraisal is the biggest hurdle for a saint.
ब्राह्मीलिपि	𑀅𑀧𑀦𑀻 𑀙𑀯𑀺 𑀅𑀧𑀦𑁄𑀁 𑀫𑁂𑀁 𑀉𑀞𑀸𑀦𑁂 𑀓𑀻 𑀆𑀓𑀸𑀁𑀓𑁆𑀱𑀸 𑀳𑀻 𑀲𑀸𑀥𑀓 𑀓𑁂 𑀮𑀺𑀏 𑀩𑀸𑀥𑀓 𑀳𑁃
पद्यानुवाद	महिमा हो गुणगान की, एसा चाहें साधक। साधक के लिए बनत हैं, आकांक्षायें बाधक।।

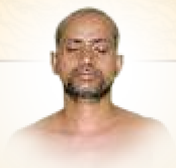

हिन्दी	हे श्रमण ! समता है तो संतवृत्ति, अन्यथा पशुवृत्ति।
संस्कृत	श्रमण ! समता तु साधुवृत्तिरन्यथा पशुवृत्तिः।
प्राकृत	समण ! समदा ता साहुवित्ती अण्णहा पसुवित्ती।
अपभ्रंश	समण ! समत्तु ता साहुवित्ती अण्णहा पसुवित्ती।
मराठी	हे श्रमण ! समता आहे तर संतवृत्ति, अन्यथा पशुवृत्ति .
छत्तीसगढ़ी	ऐ साधु बाबा ! साधूता तभे हवे जबतक समता हे नइता जानवरता।
गुजराती	હે શ્રમણ ! સમતા છે તો સંતવૃત્તિ, અન્યથા પશુવૃત્તિ.
तेलगु	ఓ శ్రమణుడు ! సమత ఉంటే సాధుత్వం, లేకుంటే పశుత్వం.
आंग्ल	O, Monk ! If have equanimity, then a saint tendency, otherwise of animal one / cruelty.
ब्राह्मीलिपि	𑀳𑁂 𑀰𑁆𑀭𑀫𑀡! 𑀲𑀫𑀢𑀸 𑀳𑁃 𑀢𑁄 𑀲𑀁𑀢𑀯𑀼𑀢𑁆𑀢𑀺, 𑀅𑀦𑁆𑀬𑀣𑀸 𑀧𑀰𑀼𑀯𑀼𑀢𑁆𑀢𑀺॥
पद्यानुवाद	संतवृत्ति मुनि में रहे, गर हो समता भाव। पशुवृत्ति तब होत है, जब समता ना भाव।।

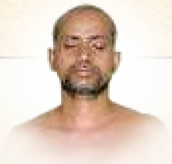

हिन्दी	साधु यानी माटी से अमृत निचोड़ने की साधना।
संस्कृत	मृतोऽमृतं निष्क्रान्तस्य साधना साधुः।
प्राकृत	रजादु अमिदं णिक्कंतस्स साहणा साहू।
अपभ्रंश	रजाहु अमिद णिक्कंतस्सु साहणा साहू।
मराठी	साधू म्हणजे मातीतून अमृत पिळून काढण्याची साधना .
छत्तीसगढ़ी	साधु मतलब माटी ले जीवनरस निचोरे के तपस्सा।
गुजराती	સાધુ મતલબ છે માટી થી અમૃત નિચોડવાની સાધના.
तेलगु	సాధు అంటే ఇసుక నుండి అమృతం తీసే అంత ప్రయత్నం.
आंग्ल	Saint means religious practice of squeezing the nectar from clay.
ब्राह्मीलिपि	[illegible]
पद्यानुवाद	मिट्टी तपा निकालना, अमृत रस का पान। मुनि बन करना साधना, है इसकी पहिचान।।

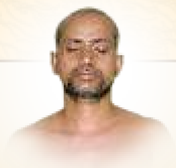

हिन्दी	भो चेतन ! तेरा मित्र स्वयं तेरे भीतर बैठा है। खोज रहा बाहर तू किस सहयोगी को ?
संस्कृत	चेतन ! मित्रं ते तेऽन्तरङ्ग उपविश्यति, कं सहयोगिनमन्विषसि त्वं वाह्ये।
प्राकृत	चेयण ! तुज्झ मित्तं सयं तुज्झ अंतसे। कं सहजोगिं तुं बाहिर हेरसि।
अपभ्रंश	चेयण ! तउ मित्त सयं तउ अंतसे। का सहजोगी तुहुं बाहिर हेरहि।
मराठी	भो चेतन ! तुझा मित्र स्वयं तुझ्यात वास करतो, शोध करतो बाहेर तू कोण्या सहयोगीचा ?
छत्तीसगढ़ी	हे जीव ! तोर संगी तोर अंदरेच्च बैठे हे, अउ बाहिर मा कोन मितान ला ढूंढथस।
गुजराती	ભો ચેતન ! તારો મિત્ર તારા પોતાના અંદર બેઠો છે ; શોધતો છે તું બાહર કોણ સહયોગી ને
तेलगु	ఓ చేతన్ ! నీ మిత్రుడు స్వయం నీలోపలనే ఉన్నాడు. నీవు బయట ఏ సహాయోగిని వెదుకుతున్నావు?
आंग्ल	O, Soul ! Your friend exist inside you, not to search anything / anyone outside.
ब्राह्मीलिपि	[illegible] [illegible] [illegible]
पद्यानुवाद	भो चेतन ! क्यों खोजता, अपना साथी यार ? तेरे में ही है वसा, तेरा अपना यार।।

हिन्दी — अपने अंदर अपने प्रियतम को खोज लेने का नाम उत्तम ब्रह्मचर्य है।

संस्कृत — उत्तमब्रह्मचर्यः स्वस्मिन् स्वस्य प्रियतमान्वेषणम्।

प्राकृत — णियम्हि णियस्स पियदम–अण्णेसणं उत्तमबंभचेरं।

अपभ्रंश — णिए णियस्सु पियदम–अण्णेसण उत्तमबंभचेर।

मराठी — आपल्यातच आपल्या प्रियतमाला हुडकण्याचे नाव उत्तम ब्रह्मचर्य आहे .

छत्तीसगढ़ी — अपन अंदरमा अपन मनपसंद (आत्मा) ला ढूढ़े के नाव उत्तम ब्रम्हचर्य हवे।

गुजराती — પોતાના અંદર પોતાના પ્રિયતમ ને ખોળવાનું નામ ઉત્તમ બ્રહ્મચર્ય છે

तेलगु — మన లోపల మన ప్రియుణ్ణి అన్వే అన్వేషించడం
పేరే ఉత్తమ బ్రహ్మచారి.

आंग्ल — Supreme celibacy is to find dearest one inside you.

ब्राह्मीलिपि — 𑀅𑀧𑀦𑁂 𑀅𑀁𑀤𑀭 𑀅𑀧𑀦𑁂 𑀧𑁆𑀭𑀺𑀬𑀢𑀫 𑀓𑁄 𑀔𑁄𑀚 𑀮𑁂𑀦𑁂 𑀓𑀸
𑀦𑀸𑀫 𑀉𑀢𑁆𑀢𑀫 𑀩𑁆𑀭𑀳𑁆𑀫𑀘𑀭𑁆𑀬 𑀳𑁃 ॥𑁬𑁬॥

पद्यानुवाद — जो है निज में खोजता, लख निज का प्रियतम।
आगम में उसको कहा, है ब्रह्मचर्य उत्तम।।

हिन्दी	मित्र ! सादगी को प्रतिष्ठित किये बिना, अहिंसा के बंद द्वार हम खोल नहीं सकते।
संस्कृत	मित्र ! सहजतां विना प्रतिष्ठितेन अहिंसाया बन्दद्वारमुद्घाटयितुमशक्यः।
प्राकृत	मित्त ! सहजत्तं पदिट्ठिएण विणा अहिंसाए आवुद–दुवारं उग्घाडणं असक्कं।
अपभ्रंश	मित्त ! सहजत्तु पदिट्ठिएण विणा अहिंसाहे आवुद–दुवार उग्घाडण असक्क।
मराठी	मित्र ! सरळतेला प्रतिष्ठित केल्याशिवाय, अहिंसा द्वार आपण उघडू शकत नाही.
छत्तीसगढ़ी	संगी ! सादगी (सादापन) के सम्मान बिना, अहिंसा के दरवज्जा ला हमन कैसे उधार सकत हन्।
गुजराती	મિત્ર ! સરળતા ને પ્રતિષ્ઠિત કિધા વગર, અહિંસા ના બંધ દરવાજે અમે ખોલી નહીં શકતા.
तेलगु	ఓ మిత్రుడు ! సహజత్వం లేకుంటే అహింస యొక్క ద్వారాలు మనం ఉద్ఘాటించలేము.
आंग्ल	O, Friend ! Without establishing simplicity, one cannot open the closed door of non - violence.
ब्राह्मीलिपि	[illegible]
पद्यानुवाद	निज में पहले कीजिये, सरल भाव स्वीकार। सहज हुये खुलते नहीं, बंद अहिंसा द्वार।।

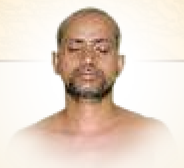

हिन्दी	हे मित्र ! देखो जानो और जाने दो।
संस्कृत	मित्र ! पश्य, जानीष्व, त्यज।
प्राकृत	मित्त ! पस्स, णज्ज, तज्ज।
अपभ्रंश	मित्त ! जोय, जाण, मुय।
मराठी	मित्र ! पहा, जाणा, जाऊ द्या .
छत्तीसगढ़ी	संझी ! देखले, पहिचान ले अउ जावन दे।
गुजराती	હે મિત્ર ! જોઓ , જાણો અને જાવા દો.
तेलगु	ఓ మిత్రుడు ! చూడు, అర్థంచేసుకో మరియు వదలిపెట్టు.
आंग्ल	O, Friend! See, feel / know and left it.
ब्राह्मीलिपि	[illegible]
पद्यानुवाद	पहले देखो जानलो, जानके जाने दो। सुखमय जीवन कर जियो, दिन नये आने दो।।

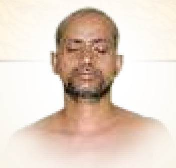

हिन्दी	मोहनीय कर्म सभी कर्मों का राजा है।
संस्कृत	सर्वस्य कर्मणो राजा मोहनीयः।
प्राकृत	सयलकम्मराया मोहणीयो।
अपभ्रंश	सयलकम्मराया मोहणीउ।
मराठी	मोहनीय कर्म सर्व कर्मांचा राजा आहे .
छत्तीसगढ़ी	जम्मो करम के राजा मोहनी रकम हवे।
गुजराती	મોહનીય કર્મ બધા કર્મો નો રાજો છે.
तेलगु	అన్ని కర్మల రాజా మోహనీయం కర్మ.
आंग्ल	Deluding karma is the supreme karma.
ब्राह्मीलिपि	𑀫𑁄𑀳𑀦𑀻𑀬 𑀓𑀭𑁆𑀫 𑀲𑀪𑀻 𑀓𑀭𑁆𑀫𑁄 𑀓𑀸 𑀭𑀸𑀚𑀸 𑀳𑁃। [illegible]।
पद्यानुवाद	अष्टकर्म को जानिये, करके करम बखान। मोहनीय इनमें प्रबल, कर्मों का नृप जान।।

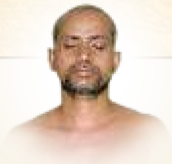

हिन्दी	अशांत मन अपेक्षाओं से भरा होता है और शांत मन अपेक्षाओं से खाली।
संस्कृत	अशान्मनः पूर्णोऽपेक्षायाः शान्तमनश्च रिक्तोऽपेक्षायाः।
प्राकृत	असंतचित्तं अवेक्खा-संजुत्तं, संतचित्तं अवेक्खा-विजुत्तं।
अपभ्रंश	असंत्तचित्ता अवेक्खा-संजुत्ता, संतचित्ता अवेक्खा-विजुत्ता।
मराठी	अशांत मन अपेक्षानी भरलेले असते आणि शांत मन अपेक्षांनी रिक्त .
छत्तीसगढ़ी	पर भरोसा मा जी अशांत होथे अउ शांत जी अपन भरोसा मा होथे।
गुजराती	અશાંત મન અપેક્ષાઓ થી ભર્યું હોય છે અને શાંત મન અપેક્ષાઓ થી ખાલી.
तेलगु	అశాంతమైన మనస్సు అపేక్షలతో నిండి ఉంటుంది మరియు శాంతమైన మనస్సు అపేక్షలు లేకుండా ఉంటుంది.
आंग्ल	Disturbed mind is filled with expectations, but peaceful mind is vacant from expectation.
ब्राह्मीलिपि	[illegible]
पद्यानुवाद	मन-अशांत तब-तब रहे, रहे अपेक्षा भाव। मन प्रशन्न तब होत है, रखे उपेक्षा भाव।।

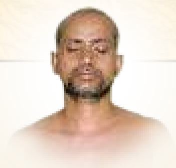

भाषा	
हिन्दी	हे साधक ! लोक प्रसिद्धि आत्म सिद्धि नहीं है ।
संस्कृत	साधक ! नात्मसिद्धिर्लोकप्रसिद्धिः ।
प्राकृत	हे साहग ! लोय–पसिद्धी णत्थि अप्प–सिद्धी ।
अपभ्रंश	हे साहग ! लोय–पसिद्धि णत्थि अप्पसिद्धि ।
मराठी	हे साधक ! लोक प्रसिद्धि आत्म सिद्धि नाही .
छत्तीसगढ़ी	हे जोगी ! जगत परसिद्धी आत्मसिद्धी नइ हे ।
गुजराती	હે સાધક ! લોક પ્રસિદ્ધિ આત્મા સિદ્ધિ નથી .
तेलगु	ఓ సాధకుడు ! లోకంలో ప్రసిద్ధి పొందడంతో మన ఆత్మ యొక్క సిద్ధి కాదు.
आंग्ल	O, Saint! The stardom in the world is not the accomplishment of the soul.
ब्राह्मीलिपि	𑀳𑁂 𑀲𑀸𑀥𑀓। 𑀮𑁄𑀓 𑀧𑀲𑀺𑀤𑁆𑀥𑀺 𑀅𑀧𑁆𑀧 𑀲𑀺𑀤𑁆𑀥𑀺 𑀡 𑀳𑁄𑀤𑀺।
पद्यानुवाद	साधक भूल ना कीजिये, करके लोक प्रसिद्धि । आतमा की सिद्धि नहीं, बनती लोक प्रसिद्धि ।।

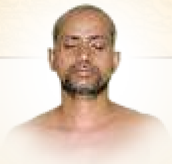

हिन्दी	हे मित्र ! पर दोषों को कहने में मौन ही श्रेष्ठ है।
संस्कृत	मित्र ! परदोषवादने मौनमेवश्रेय: ।
प्राकृत	मित्त ! परदोसवदणे मोणं वरं।
अपभ्रंश	मित्त ! परदोसवदणि वर–मोण।
मराठी	हे मित्र ! पर दोष कथनात मौन च श्रेष्ठ आहे .
छत्तीसगढ़ी	हे संज्ञी ! दूसर के बुराई बोले तो चुप्पी बने।
गुजराती	હે મિત્ર ! બીજાના દોષ કહેવામાં મૌન જ શ્રેષ્ઠ છે.
तेलगु	ఓ మిత్రుడు! ఇతరుల దోషాలను చెప్పడం కంటే మౌనం వహించడం శ్రేష్ఠం.
आंग्ल	O, Friend ! It is better to keep mum in saying other faults.
ब्राह्मीलिपि	[illegible]
पद्यानुवाद	पर दोषों को खोजना, अरू कहना क्या जेष्ठ ? दोष देख रहना कहा, मौन वहाँ है श्रेष्ठ।।

हिन्दी	हे साधक ! स्वचिद्स्वरूप को नहीं भूलना।
संस्कृत	साधक ! स्वचिद्रूपं मा विस्मार्षीः।
प्राकृत	हे साहग ! णिय–चिद–सरूवं ण विसरेज्जा।
अपभ्रंश	हे साहग ! णियचिद–सरूवु ण विसरेवा।
मराठी	हे साधक ! स्वचिद्स्वरूपाला विसरू नकोस .
छत्तीसगढ़ी	हे तपस्सवी ! ते खुदेच ला भर झन भूला देवे।
गुजराती	હે સાધક! સ્વચિદ્સ્વરૂપ ને ભૂલશો નહીં.
तेलगु	ఓ సాధకుడు ! స్వయం యొక్క చిత్ స్వరూపాని మరవకూడదు.
आंग्ल	O, Saint ! Do not forget our self - consciousness nature.
ब्राह्मीलिपि	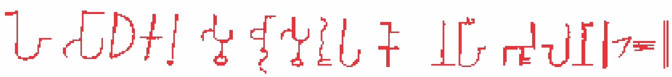
पद्यानुवाद	साधक बन मत देखिये, अपने तन का रूप। साधक बन ना भूलिये। अपना चिद्–स्वरूप।।

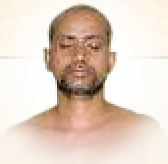

हिन्दी — हे साधक ! व्रतों की विराधना करके अरिहंत मुद्रा को मत लजाओ।

संस्कृत — साधक ! व्रतं विराध्य अरिहन्तमुद्रां मा तिस्कार्षीः ।

प्राकृत — साहग ! वयाणं विराधित्ता अरुहवेसं मा णिब्भत्थं ।

अपभ्रंश — साहग ! वयाहं विराधेवि अरूहभेस मा लूस ।

मराठी — हे साधक ! व्रतांची विराधना करून अरिहंत मुद्रेला लाजवू नकोस .

छत्तीसगढ़ी — ए बाबा जी ! नियम धरम के अपमान करके भगवान के भेष के बेज्जति झन करा देबे ।

गुजराती — હે સાધક ! વ્રતો ની વિરાધના કરીને અરિહંત ની મુદ્રા ને લજાવો નહી.

तेलगु — ఓ సాధకుడు ! వ్రతాలను విరాధించి అరిహంతుని ముద్రను తిరస్కరించకు.

आंग्ल — O, Saint! By violating the vows, do not defame the posture / form of Jina (an embodied pure soul).

ब्राह्मीलिपि — 𑀳𑁂 𑀲𑀸𑀥𑀓 । 𑀯𑁆𑀭𑀢𑁄𑀁 𑀓𑀻 𑀯𑀺𑀭𑀸𑀥𑀦𑀸 𑀓𑀭𑀓𑁂 𑀅𑀭𑀺𑀳𑀁𑀢 𑀫𑀼𑀤𑁆𑀭𑀸 𑀓𑁄 𑀫𑀢 𑀮𑀚𑀸𑀑 ॥

पद्यानुवाद — व्रत विराधना करन से, लजत है जिनमुद्रा।
व्रत अराधना करन से, शान है जिन-मुद्रा।।

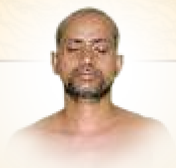

हिन्दी	हे साधक ! ध्यान, ध्यान के लिए नहीं, निर्वाण के लिए है।
संस्कृत	साधक ! ध्यानं निर्वाणाय न तु ध्यानाय।
प्राकृत	साहग ! झाणं णिव्वाणट्ठं ण दु झाणट्ठं।
अपभ्रंश	साहग ! झाण णिव्वाणासु ण तु झाणासु।
मराठी	हे साधक ! ध्यान, ध्यानासाठी नाही, निर्वाणासाठी आहे .
छत्तीसगढ़ी	हे साधु सुन ! ध्यान, ध्यान बर नइ करेजाये, निर्वान बर करे जाथे।
गुजराती	હે સાધક ! ધ્યાન, ધ્યાન માટે નથી, નિર્વાણ માટે છે.
तेलगु	ఓ సాధకుడా ! ధ్యానము, ధ్యానము కోసం కాదు, నిర్వాణం కోసం చేయు.
आंग्ल	O, Saint ! Meditation is not for meditation, it is for the attainment of salvation.
ब्राह्मीलिपि	[illegible]
पद्यानुवाद	ध्यान लगावन के लिये, नहीं होत है ध्यान। ध्यान लगाकर कीजिये, तुम अपना निर्वाण।।

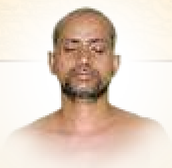

हिन्दी	रो ही पाओगे, रोक नहीं पाओगे।
संस्कृत	त्वं कृन्द मात्रं, मा रुधः।
प्राकृत	तुं मेत्तं कंदेउ, णेव रुंभेउ।
अपभ्रंश	तुहुं मेत्त कंदउ, णेव रुंभउ।
मराठी	रडू तर शकता, पण थांबवू नाही शकत.
छत्तीसगढ़ी	रो बस पाबे, रोक नइ पाबे।
गुजराती	ઘમંઘડ઼ .ઊટ સારથી હોય છે.
तेलगु	ఏడ్చగలరు కాని ఆపలేరు.
आंग्ल	You can only cry, but can't stop.
ब्राह्मीलिपि	7 G GZΛ, 7H LG GZΛ।
पद्यानुवाद	अंत घड़ी जब आएगी, कुछ न कर पायेगा ? रोक उसे सकता नहीं, बस रो ही पाएगा।।

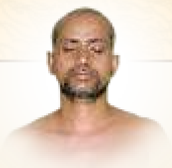

हिन्दी	'लोभ' बिना ईंधन की आग।
संस्कृत	अनीधनमग्निर्लोभः।
प्राकृत	अणीधणं अणलं लोहो।
अपभ्रंश	अणीधण–अणल लोहु।
मराठी	ईंधन शिवाय आग – लोभ.
छत्तीसगढ़ी	'लालच' जलाऊ बिना आगी।
गुजराती	[illegible]
तेलगु	ఈంధనం లేని అగ్నివలె లోభం.
आंग्ल	"Greed" The fire without fuel.
ब्राह्मीलिपि	[illegible]
पद्यानुवाद	ईंधन जितना होत है, उतनी जलती आग। बिन ईंधन के जलत है, लोभ है ऐसी आग।।

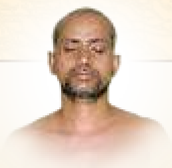

हिन्दी	मद ऊँट के समान होता है।
संस्कृत	करभकसदृशं मदः।
प्राकृत	करह–सरिसं मदं।
अपभ्रंश	मद करहसदिस।
मराठी	मद उंटासमान असतो.
छत्तीसगढ़ी	घमण्ड ऊँट असन होथे।
गुजराती	[illegible]
तेलगु	మద ఉష్ట్రః కరభకుని సమానం ఉంటుంది.
आंग्ल	Ego is like a camel.
ब्राह्मीलिपि	[illegible]
पद्यानुवाद	मद तजकर जो भी रहे, होता वही महान। मद को सबसे है कहा, मद है ऊँट समान।।

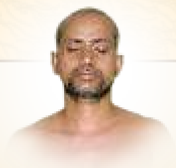

हिन्दी	हे मुमुक्षु ! पुरुषार्थ हीन नहीं बनता वीतरागी।
संस्कृत	मुमुक्षो ! अपुरुषार्थी न भवति वीतरागी।
प्राकृत	मुमुक्खु ! अववसाई ण होइ वीयराई।
अपभ्रंश	मुमुक्खु ! अववसाई ण होए वीयराई।
मराठी	हे मुमुक्षु ! पुरूषार्थ हीन नाही बनत वीतरागी .
छत्तीसगढ़ी	हे मुमुच्छु ! अलाल नइ बन सके वैरागी।
गुजराती	હે મુમુક્ષુ ! પુરુષાર્થ હીન નથી બનતા વીતરાગી.
तेलगु	ఓ ముముక్షు ! అపురుషార్థుడు వీతరాగి అవ్వడు
आंग्ल	O, Aspirant of liberation ! Effortless can't become an unattached one.
ब्राह्मीलिपि	[illegible] ॥७९।
पद्यानुवाद	मोक्षमार्ग में जो बढ़े, बनत है वैरागी। बिन पुरूषारथ के नहीं, बनते वीतरागी।।

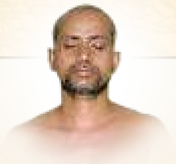

हिन्दी	ब्रह्म का नाश किसने किया ? इसे समझो और संभलो।
संस्कृत	कोऽकार्षीद् ब्रह्मनाशः ? इदं जानीहि, सावधेहि।
प्राकृत	केण किदो बंभणासो ? इदं संबुज्झ तहा संभल।
अपभ्रंश	केण किदु बंभणासु ? इमु जाण तहा संभल।
मराठी	ब्रह्मचा नाश कोणी केला ? हे समजा आणि सांभाळा .
छत्तीसगढ़ी	ब्रम्ह ला कोन मारिस ? एला जान अउ बच।
गुजराती	બ્રહ્મ નુ નાશ કોણે કિધુ ? આને સમજો અને સાંભળવો.
तेलगु	బ్రహ్మనాశన ఎవరు చేశారు, ఇది అర్థం చేసుకోండి మరియు సావధానం ప్రకటించండి.
आंग्ल	Who eradicated celibacy? Try to understand and take care of.
ब्राह्मीलिपि	[illegible]
पद्यानुवाद	ब्रह्मभाव कैसे नशा, जानो और समझो। बात समझकर है चलो, आगे अरू संभलो।।

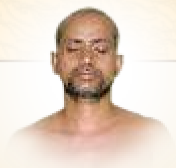

हिन्दी	क्षमा माँगने के लिए नम्रता और सरलता जरूरी है।
संस्कृत	क्षमां याचितुं नम्रता सरलता चावश्यक:।
प्राकृत	खमं मग्गेदुं णम्मत्तं सरलत्तं च आवस्सं।
अपभ्रंश	केण किदु बंभणासु ? इमु जाण तहा संभल।
मराठी	क्षमा मागण्यासाठी नम्रता आणि सरळता जरूरी आहे .
छत्तीसगढ़ी	माफि मांगेबर सिधवापना अउ विनयगुण बहुत जरूरी हे।
गुजराती	ક્ષમા માંગવા માટે નમ્રતા અને સરળતા જરૂરી છે.
तेलगु	క్షమ అడుగుటకు నమ్రత్వం మరియు సరళత్వం ఆవశ్యం.
आंग्ल	*Apology requires modesty and simplicity.*
ब्राह्मीलिपि	[illegible]
पद्यानुवाद	अपने मन में धारिये, विनय सरलता भाव। इनके विन होते नहीं, क्षमा लेन के भाव।।

हिन्दी — बाहर के सुख का अन्वेषण भीतर के सुख को खो देता है।

संस्कृत — बाह्यसुखस्यान्वेषणमाभ्यन्तरसुखं त्यजति।

प्राकृत — बहि–सुह–अण्णेसणं अंत–सुहं खवइ।

अपभ्रंश — खमा माग्गेवं णम्मत्तु सरलत्तु य आवस्सु।

मराठी — बाह्यसुखाचे अन्वेषण, अत:करणाच्या सुखाला
विसरवायला लावते .

छत्तीसगढ़ी — बाहरी सुख के तलाश अंदर के सुखला गँवा देथे।

गुजराती — બાહર ના સુખ ગોતવા માં, અંદર નો સુખ ખોવાઈ જાય છે.

तेलगु — బయటు సుఖం అన్వేషణ లోపల సుఖాన్ని నశిస్తుంది.

आंग्ल — Search of external pleasure loses internal one.

ब्राह्मीलिपि — 𑀩𑀸𑀳𑀭 𑀓𑁂 𑀲𑀼𑀔 𑀓𑀸 𑀅𑀦𑁆𑀯𑁂𑀱𑀡 𑀪𑀻𑀢𑀭 𑀓𑁂
𑀲𑀼𑀔 𑀓𑁄 𑀔𑁄 𑀤𑁂𑀢𑀸 𑀳𑁃।

पद्यानुवाद — बाहर का सुख देखकर, भीतर सुख को खोत।
जो बाहर सुख त्याग दे, फिर भीतर सुख होत।।

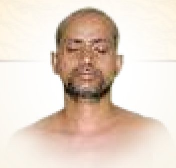

हिन्दी	चिंटी की रक्षा करना सरल है, परस्पर में वात्सल्य रखना कठिन है।
संस्कृत	पिपिलिकाया रक्षणं सुलभः, परस्परेषु वात्सल्यं दुर्लभः।
प्राकृत	पिपीलिय–रक्खा सुलहो, परोप्परं वच्छल्लं दुल्लहं।
अपभ्रंश	पिपीलिय–रक्खा सुलहा, परोप्परि वच्छल्ला दुल्लहा।
मराठी	मुंगीची रक्षा करणे सरळ आहे, पण परस्पर वात्सल्य ठेवणं कठिण आहे .
छत्तीसगढ़ी	चांटी के रक्षा सरल हे अउ आपस मा प्रेमभाव रखना मुश्किल हे।
गुजराती	ચિંટી ની રક્ષા કરવુ સરળ છે, એક-બીજા માં વાત્સલ્ય રાખવુ કઠિન છે.
तेलगु	చీమను రక్షించడం చాలా సరళం కాని ఒకరొకరితో వాత్సల్యం ఉండడం చాలా కఠినం.
आंग्ल	To save an ant is easy, but to keep affection towards each other is tough task.
ब्राह्मीलिपि	[illegible]
पद्यानुवाद	चींटी की सुरक्षा सरल, रखना इन पर भाव। आपस में रखना कठिन, रहा वात्सल्य भाव।।

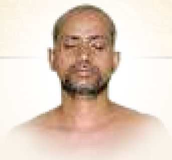

हिन्दी	सर्वज्ञ शासन, जिन शासन ही नमोऽस्तु शासन है।
संस्कृत	सर्वज्ञशासनं जिनशासनं चैव नमोऽस्तुशासनम्।
प्राकृत	सव्वण्हु–सासणं, जिणसासणं खु णमोत्थु सासणं।
अपभ्रंश	सव्वहु सासण, जिणसासण हु णमोत्थु सासण।
मराठी	सर्वज्ञ शासन, जिनशासन च नमोऽस्तु शासन आहे.
छत्तीसगढ़ी	सर्वज्ञ शासन, जिन शासनेच्च ला तो नमोऽस्तु शासन बोले जाथे।
गुजराती	સર્વજ્ઞ શાસન, જિન શાસન જ નમોસ્તુ શાસન છે.
तेलगु	సర్వజ్ఞ శాసనం మరియు జిన శాసనమే నమోస్తు శాసనం.
आंग्ल	Regime of Omniscient, regime of Jina is only a regime of obeisance (Namostu).
ब्राह्मीलिपि	[illegible]
पद्यानुवाद	जिनशासन का रूप है, सर्वज्ञ शासन नाम। इन दोनों का अपर है, नमोऽस्तु शासन नाम।।

हिन्दी	जैसे बंध्या का सुत नहीं होता, वैसे ही कषायी के क्षमा नहीं होता।
संस्कृत	बन्ध्यासुतवत् कषायीनां क्षमा नास्ति।
प्राकृत	बंज्झापुत्तमिव कसाईणं खमा णत्थि।
अपभ्रंश	बंज्झापुत्त-इव कसाईहु खमा णत्थि।
मराठी	जसे वांजोटी स्त्रीला पुत्र नसतो, तसेच कषायीला क्षमा नसते .
छत्तीसगढ़ी	जइसन बाँझ के पुत नइ होवय वैसन गुस्सैल के माफि नइ होवय।
गुजराती	જેવા વાંઝ ને દિકરો નથી હોય, તેવા કષાયી ને ક્ષમા નથી હોય.
तेलगु	ఎలాగైతే బంధ్యునికి పుత్ర ప్రాప్తి లేదో అలాగే కషాయునికి క్షమ లభించదు.
आंग्ल	As a barren woman is less of son, likewise a passionable is less of forgiveness.
ब्राह्मीलिपि	[illegible]
पद्यानुवाद	जैसे बन्ध्या, सुत विना, बनती नहीं है माँ। वैसे ना कषायी के, हृदय होत है क्षमा।।

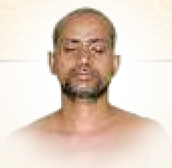

हिन्दी	जैसे भैंस को भैंस का दूध पिलाया जाता है, वैसे ही ज्ञान को ज्ञान में लगाया जाता है।
संस्कृत	यथा महीषीं महीष्या दुग्धं पाययति तथैव ज्ञानं ज्ञाने लागयति।
प्राकृत	जहा महीसिं महीसीए दुद्धं पज्जेइ तहेव णाणं मिज्जेइ।
अपभ्रंश	जहा महीसी महीसीहे दुद्ध पज्जए, तहेव णाण णाणे मिज्जए।
मराठी	जसं म्हशीला म्हशीचे दुध पाजवले जाते तसं च ज्ञानाला ज्ञानात लावले जाते.
छत्तीसगढ़ी	जइसन भंइसि के दूध भंइसि ला ठेठवार पिया देथे, वइसने ज्ञान ला ज्ञान मा साधु मन लगा देथे।
गुजराती	જેમ ભેંસ ને ભેંસ નું દૂધ પિવડાવે છે, તેમ જ જ્ઞાન ને જ્ઞાન માં લગાવવું પડે છે.
तेलगु	ఎలాగైతే బర్రెకు బర్రె పాలే త్రాగిస్తాము, అలాగే జ్ఞానాన్ని జ్ఞానంతోనే ఉపయోగించాలి.
आंग्ल	As the milk of buffalo is provided to her only, in the same way knowledge use to be engrossed in knowledge only.
ब्राह्मीलिपि	[illegible]
पद्यानुवाद	ज्ञानी–जन निज–ज्ञान को, ज्ञान में दें लगाय। ज्यों भैंस का भैंस को, दे दूध है पिलाय।।

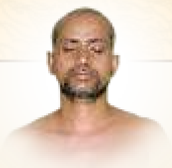

हिन्दी	आत्मा का शत्रु मिथ्यात्व है।
संस्कृत	आत्मशत्रुर्मिथ्यात्वम्।
प्राकृत	आद-रिऊ मिच्छत्तं।
अपभ्रंश	अप्प-रिऊ मिच्छत्तु।
मराठी	आत्म्याचा शत्रु मिथ्यात्व आहे .
छत्तीसगढ़ी	जीव के जानि दुश्मन मिथ्यात्व हे।
गुजराती	आत्मा नो शत्रु मिथ्यात्व छे.
तेलगु	ఆత్మ యొక్క శత్రువు మిథ్యాత్వం.
आंग्ल	An enemy of the soul is falsity.
ब्राह्मीलिपि	𑀆𑀢𑁆𑀫𑀸 𑀓𑀸 𑀰𑀢𑁆𑀭𑀼 𑀫𑀺𑀣𑁆𑀬𑀸𑀢𑁆𑀯 𑀳𑁃 ‖77‖
पद्यानुवाद	मत भटका तू आत्मा, कर निज की पहचान। मिथ्यात्व शत्रु आत्म का, बना इसे तू जान।।

हिन्दी	राग हटाओ कष्ट मिटाओ।
संस्कृत	रागमपहृत्य कष्टं नश्य।
प्राकृत	रागं ताड दुक्खं हार।
अपभ्रंश	रागु ताड दुक्ख हार।
मराठी	राग दूर करा, कष्ठ दूर करा .
छत्तीसगढ़ी	मया हटा दुख मिटा
गुजराती	રાગ હટાઓ , કષ્ટ મિટાવો.
तेलगु	రాగం లేకుంటే కష్టాలన్ని నశిస్తాయి.
आंग्ल	If want to be painless, aloof yourself from attachment.
ब्राह्मीलिपि	𑀭𑀸𑀕 𑀳𑀝𑀸𑀑 𑀓𑀱𑁆𑀝 𑀫𑀺𑀝𑀸𑀑।
पद्यानुवाद	राग कष्ट है जनक, इसको जान जाओ। पहले राग हटाय के, अपना कष्ट मिटाओ।।

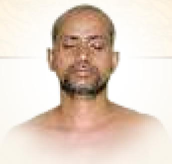

हिन्दी	साधना में भीड़ तो हो सकती है, किन्तु भीड़ में साधना नहीं होती।
संस्कृत	साधनायां जनसमूहस्तु भवेत् साधना तु न जनसमूहे।
प्राकृत	साहणाए जणसमूहो हवे, ण दु जणसमूहे साहणा।
अपभ्रंश	साहणाहिं जणसमुहु होउ, ण तु जणसमूहि साहणा।
मराठी	साधनेमध्ये गर्दी तर होउ शकते, पण गर्दीत साधना होत नाही.
छत्तीसगढ़ी	तपस्सा मा भीर ता हो सकथे लेकिन भीर मा तपस्सा नइ हो सके।
गुजराती	સાધના માં ભીડ તો હોઇ શકે છે, પરંતુ ભીડ માં સાધના નથી હોય.
तेलगु	సాధనలో జనుల సమూహం ఉంటుంది కాని జనుల సమూహంలో సాధన ఉండదు.
आंग्ल	There can be crowd in spiritual endeavour but the same can't be in crowd.
ब्राह्मीलिपि	𑀲𑀸𑀥𑀦𑀸 𑀫𑁂𑀁 𑀪𑀻𑀟 𑀢𑁄 𑀳𑁄 𑀲𑀓𑀢𑀻 𑀳𑁃, 𑀓𑀺𑀦𑁆𑀢𑀼 𑀪𑀻𑀟 𑀫𑁂𑀁 𑀲𑀸𑀥𑀦𑀸 𑀦𑀳𑀻𑀁 𑀳𑁄𑀢𑀻।।
पद्यानुवाद	साधक की साधना में, हो सकती है भीड़। साधना नहीं हो सकत, जहाँ रहे ये भीड़।।

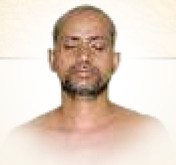

भाषा	वाक्य
हिन्दी	स्वयं के ज्ञान को पर ज्ञेयों से हटाकर स्वयं के ज्ञान में लगाना ही ध्यान है।
संस्कृत	परज्ञेयद् ज्ञानमपहृत्य ज्ञाने संलग्नीकरणं ध्यानम्।
प्राकृत	परणेयादु णाणं खलित्तु णाणे लीणकरणं झाणं।
अपभ्रंश	परणेयाहु णाण खएवि णाणे लीणकरण झाण।
मराठी	स्वत:च्या ज्ञानाला पर ज्ञेयांपासून हटवून स्वत:च्या ज्ञानात लावणेच ध्यान आहे.
छत्तीसगढ़ी	सयं के बृद्धि ला दूसर ले हटाके खुदेच्च मा लगाए के नाव ता ध्यान हे।
गुजराती	પોતાના જ્ઞાનને જ્ઞેયો થી હટાવી ને પોતાના જ્ઞાન માં લગાવવું જ ધ્યાન છે.
तेलगु	స్వయం యొక్క జ్ఞానాన్ని ఇతరులపై కాకుండా స్వయం యొక్క జ్ఞానం కోసం ఉపయోగించడమే ధ్యానం.
आंग्ल	To use the knowledge of self / soul in self knowledge being aloof it from other objects of knowledge is only a meditation.
ब्राह्मीलिपि	𑀲𑁆𑀯𑀬𑀁 𑀓𑁂 𑀜𑀸𑀦 𑀓𑁄 𑀧𑀭 𑀜𑁂𑀬𑁄𑀁 𑀲𑁂 𑀳𑀝𑀸𑀓𑀭 𑀲𑁆𑀯𑀬𑀁 𑀓𑁂 𑀜𑀸𑀦 𑀫𑁂𑀁 𑀮𑀕𑀸𑀦𑀸 𑀳𑀻 𑀥𑁆𑀬𑀸𑀦 𑀳𑁃।
पद्यानुवाद	पर ज्ञेयों से दूरकर, अपने निज का ज्ञान। निज ज्ञेयों को ज्ञान में, लगना ही है ध्यान।।

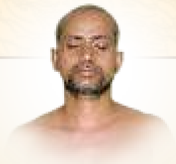

हिन्दी	पेट स्वस्थ रहता है कम खाने से, चित्त स्वस्थ रहता है कम बोलने से।
संस्कृत	स्तोकाशनादुदरः स्तोकवदनाच्चित्तं स्वस्थः।
प्राकृत	अप्प-असणादु उदरो सत्थो, अप्पवदणादु चित्तं।
अपभ्रंश	थोव-असणाहु उदरु सत्थु, थोववदणाहु चित्त।
मराठी	पोट स्वस्थ राहते कमी खाण्याने, चित्त स्वस्थ राहते कमी बोलण्याने.
छत्तीसगढ़ी	पेट बने रहिथे कम खाए ले, अउ मन बने रहिथे कम बोले ले।
गुजराती	પેટ સ્વસ્થ રહે છે ઓછું ખાવાથી; ચિત્ત સ્વસ્થ રહે છે ઓછું બોલવાથી
तेलगु	తక్కువ భోజనంతో ఉదరం క్షేమంగా ఉంటుంది, తక్కువ మాట్లాడటంతో మన మనస్సు క్షేమంగా ఉంటుంది.
आंग्ल	If a person does not eat too much, will remain healthy and his mind will remain healthy by not speaking too much.
ब्राह्मीलिपि	[illegible]
पद्यानुवाद	नियम स्वास्थ्य के जानिये, रहिये सदा पवित्र। कम भोजन से पेट अरू, कम बोलन से चित्त।।

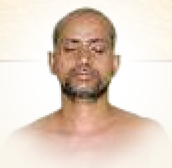

हिन्दी	घर की अग्नि पड़ोसी बुझा सकता है, पर कामना की अग्नि स्वयं बुझाना पड़ती है।
संस्कृत	गृहाग्निं अन्यः कामनाग्निं तु स्वयं शमयेत्।
प्राकृत	गिहग्गि अण्णे कामग्गिं दु सयं उवसमेउ।
अपभ्रंश	गिहाणला अण्णा कामाणला तु णिउ उवसमउ।
मराठी	घराची आग शेजारी विझवु शकतो, पण इच्छेची आग स्वतः लाच विझवावी लागते.
छत्तीसगढ़ी	घर के आगी-ला परौसी बुता सकथे लेकिन इच्छा के आगी ला त खुदेच्च ला बुताए बर परहि।
गुजराती	ઘર ની અગ્નિ પડોશી બુઝાવી શકે છે, પણ કામના ની અગ્નિ પોતાને બુઝાવી પડે છે.
तेलगु	మన ఇంటి అగ్నిని పక్కోలు ఆర్పివేయొచ్చు కానీ కోరికల అగ్నిని మనం స్వయముమే ఆర్పివేయాలి.
आंग्ल	A fire of home can be extinguish by your neighbour, but you only have to extinguish the fire of lust/desire.
ब्राह्मीलिपि	[illegible]
पद्यानुवाद	आग लगी गृहवास में, बुझा पड़ोसी देत। लगी काम की दाह को स्वयं बुझानी होत॥

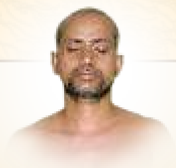

हिन्दी	पर को सम्हालना बहुत ही सरल है, निज को सम्हालना उतना ही कठिन।
संस्कृत	परस्य सम्हालनं सुलभः स्वस्य तु दुर्लभः।
प्राकृत	परस्स ठिदिकरणं सुलहो सगस्य दु असुलहो।
अपभ्रंश	परस्सु ठिइकरणा सुलहा, सगस्तु तु असुलहा।
मराठी	दूस–याला सांभाळणे फार सरळ आहे, स्वतः ला सांभाळणे तेवढेच कठिण .
छत्तीसगढ़ी	दूसर के रक्षा जतेक सरल हे वतके कठिन अपन रक्षा होथे।
गुजराती	બીજાને સંભાળવું ઘણું સરળ છે, પોતાને સંભાળવું તેટલું જ કઠિન છે.
तेलगु	ఇతరులను సంభాళించడం ఎంత సరళమో స్వయంను సంభాళించడం అంతే కఠినం.
आंग्ल	It is too though to handle self than non - selves.
ब्राह्मीलिपि	𑀧𑀭 𑀓𑁄 𑀲𑀫𑁆𑀳𑀸𑀮𑀦𑀸 𑀩𑀳𑀼𑀢 𑀳𑀻 𑀲𑀭𑀮 𑀳𑁃 𑀦𑀺𑀚 𑀓𑁄 𑀲𑀫𑁆𑀳𑀸𑀮𑀦𑀸 𑀉𑀢𑀦𑀸 𑀳𑀻 𑀓𑀞𑀺𑀦𑁇
पद्यानुवाद	पर को समझना सरल, अरू सम्हालना काम। समझाना निज को कठिन, अरू सम्हालना काम।।

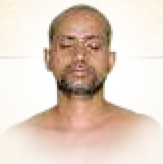

हिन्दी	हँसना – रोना हिंसा है, कुछ न करना ही अहिंसा है।
संस्कृत	हसनं रुधनं हिंसा, न किञ्चित्करणमहिंसा।
प्राकृत	हसणं रुदणं हिंसा ण किंचि करणं अहिंसा।
अपभ्रंश	हसण रुदण हिंसा ण किंचि करण अहिंसा।
मराठी	हसणे–रडणे हिंसा आहे, कही न करणेच अहिंसा आहे .
छत्तीसगढ़ी	हांसी–रोवाई दुन्नों हिंसा हे, कुच्छु नइ करबे ता अहिंसा हे।
गुजराती	હસવુ-રોવુ હિંસા છે, કંઈ નથી કરવુ જ અહિંસા છે.
तेलगु	నవ్వడం - ఏడ్వడం హింస, ఏమి చేయకుండా ఉండడమే అహింస.
आंग्ल	To laugh and cry is violence, doing nothing is only a non - violence.
ब्राह्मीलिपि	𑀳𑀲𑀦𑀸 - 𑀭𑁄𑀦𑀸 𑀳𑀺𑀁𑀲𑀸 𑀳𑁃, 𑀓𑀼𑀙 𑀦 𑀓𑀭𑀦𑀸 𑀳𑀻 𑀅𑀳𑀺𑀁𑀲𑀸 𑀳𑁃।
पद्यानुवाद	हँसना–रोना है कहा, ये हिंसा का स्वरूप। हँसना–रोना ना करो, तभी अहिंसा रूप।।

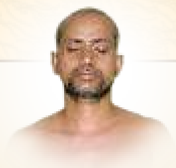

हिन्दी	भाषा से भावों का बोध होता है।
संस्कृत	भाषया भावस्य बोधो भवति।
प्राकृत	भासाए भाव–बोहो।
अपभ्रंश	भासए भावबोहु।
मराठी	भाषेतुन भावनांचा बोध होतो .
छत्तीसगढ़ी	बोली ले भावना के जानकारी होथे।
गुजराती	ભાષા થી ભાવો નો બોધ હોય છે.
तेलगु	భాషతో భావాల బోధనం అవ్వుతుంది.
आंग्ल	Volition/thought activity expressed through languages.
ब्राह्मीलिपि	[illegible]
पद्यानुवाद	भाव छिपा सकते नहीं, भाषा सब कह देत। भाव का बोधक यहाँ, भाषा करवा देत।।

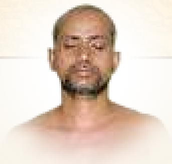

हिन्दी	रत्नत्रय धर्म से युक्त आत्मा समयसार है।
संस्कृत	रत्नत्रययुक्तात्मा समयसारः।
प्राकृत	रयणत्तजुद–आदा समयसारो।
अपभ्रंश	रयणत्तयजुद–अप्पु समयसारु।
मराठी	रत्नत्रय धर्माने युक्त आत्मा, समयसार आहे.
छत्तीसगढ़ी	रत्नत्रय धर्मी जीव समयसार हे।
गुजराती	रत्नत्रय धर्म थी युक्त आत्मा समयसार छे.
तेलगु	రత్నత్రయ ధర్మంతో యుక్తమైన ఆత్మనే సమయసారం.
आंग्ल	The soul endowed with gemstrio is a Samayasāra.
ब्राह्मीलिपि	[illegible]
पद्यानुवाद	जीवन सफल बनाइये, रत्नात्रय को धार। रत्नात्रय से युक्त है, आतम समयसार।।

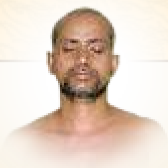

हिन्दी	आत्मा की अंतिम अवस्था का नाम है ब्रह्मचर्य धर्म।
संस्कृत	ब्रह्मचर्य आत्मनश्चरमावस्था।
प्राकृत	आदचरम–अवत्था बंभचेरं।
अपभ्रंश	अप्पचरम–दसा बंभचेर।
मराठी	आत्म्याच्या अंतिम अवस्थेचे नाव आहे ब्रह्मचर्य धर्म .
छत्तीसगढ़ी	जीव के आखरी स्थिति ला ब्रम्हचर्य बोलथे।
गुजराती	આત્મા ની છેલ્લી અવસ્થા નુ નામ છે બ્રહ્મચર્ય ધર્મ.
तेलगु	ఆత్మ యొక్క ముగింపు దశ పేరు బ్రహ్మచర్య ధర్మ.
आंग्ल	The last state of the soul is celibacy.
ब्राह्मीलिपि	𑀆𑀢𑁆𑀫𑀸 𑀓𑀻 𑀅𑀁𑀢𑀺𑀫 𑀅𑀯𑀲𑁆𑀣𑀸 𑀓𑀸 𑀦𑀸𑀫 𑀳𑁃 𑀩𑁆𑀭𑀳𑁆𑀫𑀘𑀭𑁆𑀬 𑀥𑀭𑁆𑀫 ॥
पद्यानुवाद	आतम ने धारण किये, नाना रूप के कर्म। अंत रूप इस आत्म का, बना ब्रह्मचर्य धर्म।।

हिन्दी	अहं भाव मानवता का नाश करा देता है।
संस्कृत	अहंभावो मानुष्यं नश्यति।
प्राकृत	अहंभावो णस्सइ माणुस्सं।
अपभ्रंश	अहंभावु णस्सए माणुस्सत्तु।
मराठी	अहं भाव मानवतेचा नाश करतो.
छत्तीसगढ़ी	अहंभाव इंसानियत ला मार देथे।
गुजराती	અહંભાવ માનવતા નો નાશ કરે છે.
तेलगु	గౌరవం మానవత్వాన్ని నశిస్తుంది.
आंग्ल	Pride destructs humanity.
ब्राह्मीलिपि	𑀅𑀳𑀁 𑀪𑀸𑀯 𑀫𑀸𑀦𑀯𑀢𑀸 𑀓𑀸 𑀦𑀸𑀰 𑀓𑀭𑀸 𑀤𑁂𑀢𑀸 𑀳𑁃 ।
पद्यानुवाद	अहं भाव को जानिये, मानवता का नाश। अहं भाव के तजन से, मनु का होत विकाश।।

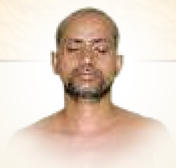

हिन्दी	संयमित जीवन ही मनुष्य जीवन का सार है।
संस्कृत	मनुष्यस्य सारः संयमितजीवनम्।
प्राकृत	णरत्त–सारो संजमिदजीवं।
अपभ्रंश	माणवत्त–सारु संजमिदजीवण।
मराठी	संयमित जीवनच मनुष्य जीवनाचा सार आहे .
छत्तीसगढ़ी	संयमी जीवन, मानुष जीवन के मसाला हे।
गुजराती	સંયમિત જીવન જ મનુષ્ય જીવન નો સાર છે.
तेलगु	సంయమమైన జీవితమే మనుష్య జీవితం యొక్క సారం.
आंग्ल	Restrained life is only the gist of human life.
ब्राह्मीलिपि	𑀲𑀁𑀬𑀫𑀺𑀢 𑀚𑀻𑀯𑀦 𑀳𑀻 𑀫𑀦𑀼𑀲𑁆𑀬 𑀚𑀻𑀯𑀦 𑀓𑀸 𑀲𑀸𑀭 𑀳𑁃 ।33।
पद्यानुवाद	मानव जीवन कर सफल, कर संयम स्वीकार। संयम में जीना कहा, जीवन का है सार।।

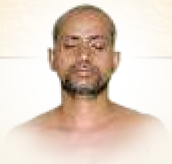

हिन्दी	वात्सल्य दृष्टि से शत्रु भी मित्र बन जाता है।
संस्कृत	वात्सल्यदृष्टेः शत्रुरपि मित्रं भवति।
प्राकृत	वच्छल्लदिट्ठीए रिऊ वि मित्तं।
अपभ्रंश	वच्छल्लदिट्ठीए रिऊ वि मित्त।
मराठी	वात्सल्य दृष्टिने शत्रु पण मित्र बनतो .
छत्तीसगढ़ी	मयारू सुभाव ले दुश्मन भी दोस्त बन जाथे।
गुजराती	વાત્સલ્ય દૃષ્ટિ થી શત્રુ પણ મિત્ર બની જાવે છે.
तेलगु	వాత్సల్యమైన దృష్టితో శత్రువు కూడా మిత్రుడు అవతాడు.
आंग्ल	Through affection an enemy transform to friend.
ब्राह्मीलिपि	
पद्यानुवाद	प्रेम भाव गर है नहीं, सब बैरी बन जात। वात्सल्य भाव से शत्रु भी, संग अपन हो जात।।

Three Equipments of Jaina Saints

Digambara Jaina Saints keep with them these three only and nothing else.

Three Equipments of Jaina Saints

Digambara Jaina Saints keep with them these three only and nothing else.